मूल्य: 20/-

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष-2, अंक:-3 मार्च, 2025

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

महिला दिवस विशेष

काम बुरा नहीं तो ऊँगली उठानेवालों की परवाह नहीं : सीता देवी, बिजली मिस्त्री

होली पर भोली महिलाएं रहें सावधान

देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद उर्दू और फारसी के जानकार थे

अतीत, वर्तमान व भविष्य : सपनों का रहस्य

मेल बॉक्स

बोलो जिंदगी

के पाठक हमसे सीधा सम्पर्क करें।

नीचे दिये गये ई-मेल के माध्यम से
हमे बतायें कि उन्हें कौन सा आलेख
ज्यादा पसंद आया।
क्या कमियां हैं
और उनके क्या सुझाव हैं।

E-mail : bolozindagi@gmail.com

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष–2, अंक: 03 मार्च, 2025

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
सलाहकार संपादक : **मनोज भावुक**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार–800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय

3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

रजि. कार्यालय

3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com
वेबसाइट : www.bolozindagi.com

सभी पद अवैतनिक

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

काम बुरा नहीं तो ऊँगली उठानेवालों की परवाह नहीं : सीता देवी, बिजली मिस्त्री 03

1. भोजपुरी गीतों में अश्लीलता के जिम्मेवार कौन? 2
2. तब विष्णु प्रभाकर को नहीं सुना होता तो आज मैं कुछ और कर रहा होता : हृषीकेश सुलभ, कहानीकार एवं नाटककार 4
3. 21 साले–सालियों के साथ फिल्म देखने जाना गजब ढ़ा गया : बीरेंद्र बरियार 'ज्योति', वरिष्ठ पत्रकार एवं चित्रकार 6
4. इतिहास की गवाही देता आमेर दुर्ग 7
5. देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद उर्दू और फारसी के जानकार थे 11
6. मैं गाँव में बहुत कम रहा पर गाँव मेरे भीतर हमेशा रहा 13
7. होली पर भोली महिलाएं रहें सावधान 17
8. 90 के दशक के गानों को सुनते हैं 18
9. अदा शर्मा अवाक रह गईं क्योंकि विदेशी लड़कियां उन्हें आश्चर्यचकित करने के लिए साड़ी पहनती हैं! 19
10. समाचार वाचकों की गति कितनी हो ? 20
11. सांसारिक सुख के अधिष्ठाता शुक्र 21
12. अतीत, वर्तमान व भविष्य : सपनों का रहस्य 23
13. 12वीं के बाद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इंजीनियर कैसे बनें ? 24
14. बिहार की राजनीति में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बेटे निशांत कुमार शामिल होंगे ? 28
15. सगाई में बड़ा ट्विस्ट–रोका या धोखा! फिनाले ड्रामा में माता–पिता की एंट्री! 30
16. होली में बनाएं संतरे के स्वाद–युक्त मालपुए 31
17. सरहद पर से 32

भोजपुरी गीतों में अश्लीलता के जिम्मेवार कौन ?

अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रैपर हनी सिंह ने अपने नए म्यूजिक वीडियो में भोजपुरी का तड़का लगाकर बहुत सुर्खियां बटोरीं। पहली बार उन्होंने भोजपुरी गीत को अपने म्यूजिक वीडियो में शामिल किया। गीत द्विअर्थी यानी डबल मीनिंग थें लिहाजा धीरे धीरे विरोध का स्वर भी उठने लगा। किसी ने कहा कि हनी सिंह भोजपुरी भाषा को गंदा कर रहे हैं, किसी ने कहा कि भोजपुरी के जरिए समाज में अश्लीलता फैला रहे हैं। यहां तक कि अदालत में उनके खिलाफ मुकदमें भी दर्ज हो गएं।

यहां सवाल उठता है कि इससे पहले भोजपुरी गीत संगीत की क्या स्थिति थी। भोजपुरी फिल्मों के कई दिग्गज गायकों, कलाकारों ने कितनी ही दफा अपने तड़कते भड़कते गीतों के जरिए अश्लीलता परोसी। भोजपुरी गीत संगीत में कोई सेंसरशिप ना होने का नतीजा ये रहा कि पैसों के लालच में जी खोलकर छोटे स्तर के कलाकारों द्वारा फूहड़ गीत लिखे और गाये गएं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आज भी ऐसे फूहड़ गीतों की भरमार है।

इतना ही नहीं लगातार होली के अवसर पर ऐसे फूहड़ गीत रचने, बेचनेवाले स्टार से लेकर गुमनाम कलाकारों ने तो हद ही पार कर दी। इसके बावजूद आजतक भोजपुरी में अश्लीलता को लेकर इतना हो हंगामा नहीं हुआ।

भोजपुरी जैसी मीठी और प्यारी भाषा को अपने निजी स्वार्थ के लिए यूं ही बदनाम किया ख्याति प्राप्त कलाकारों ने। जब आप भोजपुरी के होकर खुद ही भोजपुरी को गंदा कर माल कमाने में लगे हुए हैं तो फिर गैर भाषियों से हम क्या उम्मीद करें !

राकेश कुमार सिंह
संपादक

काम बुरा नहीं तो ऊँगली उठानेवालों की परवाह नहीं : सीता देवी, बिजली मिस्त्री

गया के राय काशी नाथ मोड़ के पास फुटपाथ पर लगभग 12–13 सालों से सीता देवी बिजली उपकरणों की मरम्मत का काम करते हुए नारी सशक्तिकरण की मिसाल पेश कर चुकी हैं। पेशे से बिजली मिस्त्री और सीता देवी के पति जितेंद्र जब एकबार 6 महीनों तक गंभीर रूप से बीमार पड़ गए तो पति के इलाज और बाल–बच्चों की भूख मिटाने के लिए सीता देवी ने मर्दों का यह काम चुना। घर पर ही बीमार पति से 2–3 महीने में ट्रेनिंग लेकर उसी फुटपाथ पर बैठकर बिजली मिस्त्री के रूप में काम शुरू कर दिया। बिजली का पंखा, कूलर, मोटर, मिक्सी इत्यादि की मरम्मत में माहिर सीता देवी के पास सी. एफ.एल. बल्ब की मरम्मत का काम ज्यादा आता था। शुरुआत में मुसीबत की उस परिस्थिति में रिश्तेदार काम तो नहीं आये मगर यह ताना जरूर देते कि 'औरत होक रोड पर बैठकर काम करती है, शर्म भी नहीं आती।' लेकिन कभी भी सीता देवी ने इन तानों की परवाह नहीं की और अपने काम में डटी रहीं।

तब उनके काम से प्रेरित होकर गया के तत्कालीन जिलाधिकारी संजय जी भी सीता देवी की खबर सुनकर काशीनाथ मोड़ पर इनको देखने आये फिर सम्मानित करने के साथ ही ग्रामीण बैंक से एक लाख का लोन दिलवाये। उसी पैसे से सी. एफ.एल.–एल.ई.डी. बल्ब बनाने का कारखाना खोलने की कोशिश में लग गईं। डी.एम.साहब ने फुटपाथ पर बैठनेवाली जगह पर नाला बनवा दिया और उनके लिए एक बोर्ड भी लगवा दिया। तब 30–40 महिलाएं सीता देवी से मुफ्त प्रशिक्षण भी पाने लगीं। इनके 4 बच्चे हैं, दो बेटा और दो बेटी। जिनमे बड़ी बेटी की शादी हो चुकी है। सीता देवी के पति जितेंद्र जी शादी के पहले मुंबई फिर दिल्ली के कारखाना में बिजली मिस्त्री का काम करते थें।

सीता देवी बताती हैं– 'तब पति जब एक बार 6 महीना लम्बा बीमार पड़े तो उस वक्त वे रह–रहकर बेहोश हो जाते थें। उन्हें काम छोड़कर घर बैठना पड़ गया। फुटपाथ के दुकान पर ही उन्होंने कुछ स्टाफ रखें थें। धीरे–धीरे सब भाग गया तब घर–परिवार चलाने के लिए सीता देवी ने मोर्चा संभाला। फुटपाती दुकान पर जो लेबर था वो अपना काम करके खुद पैसा रख लेता था और ऊपर से तनख्वाह भी मांगता था। पति का इलाज भी कराना था इसलिए बीमार पति से घर में ही खुद बिजली मिस्त्री का काम सीखने लगी और 2 –3 महीने में ही पूरा सीख गईं।' आज 19–20 साल हो गए हैं इनको बिजली मिस्त्री के रूप में काम करते हुए। कुछ साल से बड़ा लड़का माँ के साथ इनकी खुद की दुकान में बैठकर काम करने लगा है। अब सीता देवी को घर पर मन नहीं लगता। सुबह में ही 4 बजे उठकर खाना बनाकर , सबको नास्ता कराकर चली आती हैं। सुबह 9 बजे से शाम 7 बजे तक दुकान पर काम करती हैं फिर घर जाकर रात में खाना बनाती हैं। सीता देवी ने पति का बहुत इलाज कराया फिर भी वे पूरा ठीक नहीं हुए इसलिए या तो घर में रहते हैं या साथ दुकान पर बैठकर इनका हौसला बढ़ाते हैं। इनके पास सी.एफ.एल. बल्ब बनाने का काम ज्यादा आता है। सीता देवी कहती हैं 'बाल–बच्चा भूखे मर जाता इसलिए मुसीबत से निकलने के लिए मैंने ये मर्दों का काम चुना।'

2011 में 'बिहार दिवस' के मौके पर भी सीता देवी को बिहार सरकार की तरफ से सम्मानित किया जा चुका है। इनके सराहनीय प्रदर्शन को देखकर इन्हें अक्टूबर 2016 में सशक्त नारी सम्मान से सम्मानित किया गया है। अबतक और भी कई सम्मान से सम्मानित हो चुकी हैं।

❐

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

तब विष्णु प्रभाकर को नहीं सुना होता तो आज मैं कुछ और कर रहा होता :

हृषीकेश सुलभ, कहानीकार एवं नाटककार

मेरा जन्म बिहार के सिवान जिले के लहेजी गांव में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा गांव में ही हुई। मेरे पिता स्वतंत्रता सेनानी थें जो घर–बार छोड़कर 1947 तक भटकते रहें। आजादी मिलने के बाद अचानक उनका राजनीति से मोहभंग हो गया। उसकी वजह थी कि तब आजादी के बाद राजनीति ने अपना रंग बदलना शुरू कर दिया था। फिर पिता जी गांव लौटकर खेतीबाड़ी देखने लगें। एक दिन वे मुझे 13 साल की उम्र में पटना ले आये ये सोचकर कि मुझे अच्छी शिक्षा देनी है। पटना कॉलेजिएट स्कूल और फिर बी. एन.कॉलेज में मेरी आगे की शिक्षा संपन्न हुई। उसके बाद पटना विश्वविधालय के हिंदी विभाग में एम.ए.की पढ़ाई शुरू हुई। फिर वहीँ से एम.ए. पूरा किये बिना मैं नौकरी में चला गया। मध्य प्रदेश के बस्तर जिले के आकाशवाणी केंद्र में प्रसारण अधिकारी के रूप में मेरी नौकरी लगी। पढ़ाई बीच में छोड़ने के पीछे कई वजहें थीं। पहले तो लगता था एक ही वजह है परिवार की आर्थिक स्थिति लेकिन अब इस उम्र में पहुंचकर जब मैं उसका बार–बार विश्लेषण करता हूँ तो मुझे लगता है और भी कई कारण थें जो बहुत गहरे थें। मध्य प्रदेश से मेरा तबादला हुआ। मैं रांची आया फिर पटना आया। कुछ दिन वहां नौकरी करने के बाद मैंने यू.पी.एस.सी. परीक्षा दी और फिर से आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिशाषी के रूप में चुनकर आया।

फिर विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी करता रहा। नौकरी में आने से पहले ही मेरा लेखन जारी था और 1975 से ही मेरी रचनाओं का प्रकाशन शुरू हो गया था। सारिका में, प्रेमचंद जी के बड़े सुपुत्र श्रीपत राय जी एक पत्रिका एडिट करते थें 'कहानी' उसमें फिर धर्मयुग, रविवार आदि पत्रिकाओं में मेरी कहानियां छपने लगीं। मेरी पहली किताब आयी 1986 में। कहानी संकलन और अमली नाटक दोनों पुस्तकें एक साथ प्रकाशन में गयी थी लेकिन इत्तेफाक से नाटक की किताब पहले आ गयी क्यूंकि दोनों किताबों के प्रकाशक अलग थें। नाटक की किताब छपके आने से पहले ही मेरा लिखा नाटक पूरे देश में चर्चा के केंद्र में था। देश के विभिन्न हिस्सों में उसका मंचन हुआ। मेरा पहला कहानी संकलन 'पथरकट' आने के 8 साल के अंतराल के बाद दूसरा कहानी संकलन आया 'वध स्थल से छलांग'। फिर चार–पांच साल बाद तीसरा कहानी संकलन आया 'बंधा है काल'। फिर आगे चलकर प्रकाशक बदल गए और राजकमल प्रकाशन से मेरी किताबें प्रकाशित होने लगीं। फिर मेरे पुराने जो तीन कहानी संकलन थें उन तीनों संकलन की कहानियां एक जिल्द में आयीं 'तूती की आवाज' शीर्षक से और ये सिलसिला चलता रहा। तब रेडिओ से मेरा रिश्ता सिर्फ नौकरी का रहा। मैं वहां नौकरी नहीं करता तो मुन्सिपल कॉरपरेशन में नौकरी कर सकता था। मेरी रेडिओ में नौकरी की जो दुनिया रही और जो मेरी साहित्य की दुनिया रही उसे मैंने कभी मिलाया नहीं। रेडिओ से मेरा कल भी बहुत गहरा लगाव नहीं था और आज भी नहीं है। एक लम्बा अरसा वहां बीता है तो जाहिर है कुछ लोग वहां जरूर रहे होंगे जिनसे मेरा गहरा लगाव रहा हो।

एक वाक्या तब का मुझे याद आता है जब हमलोग काफी नए थें एकदम युवा। तब हर चीज के प्रति गहरी उत्सुकता और जिज्ञासा का भाव था। उस समय कॉफी हॉउस का दौर था। तब पटना के डाकबंग्ला स्थित कॉफी हॉउस में हमलोग अक्सर जाते थें। वहीँ हमने साहित्य जगत के तमाम बड़े व्यक्तित्व को पहली बार करीब से देखा और उनका आचार–व्यवहार जाना। उस दौर में बहुत से साहित्यिक लोगों से हमारी मुलाकातें हुआ करती थीं। उन्ही दिनों की बात है पटना में मशहूर लेखक विष्णु प्रभाकर आये हुए थें। उस समय उनका 'आवारा मसीहा' जो शरतचंद्र के जीवन पर आधारित है प्रकाशित हो चुका था जिससे वे बेहद प्रसिद्ध हो चुके थें। पहली बार हिंदी में ऐसा हुआ था कि हिंदी का कोई बड़ा लेखक किसी

भारतीय भाषा के दूसरे लेखक की जीवनी लिख रहा हो। और विष्णु प्रभाकर ने शरतचंद्र की जीवनी पर 14 –15 वर्षों तक काम किया था तब जाकर पुस्तक आयी थी। तब मैं बी.एन.कॉलेज के विद्यार्थी के रूप में वहां होनेवाली सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रीय रहता था। वहां हमलोगों की एक हरिश्चंद्र सभा थी जिसे बाद में बांटकर के नाट्य परिषद् को अलग किया गया। तब मैं नाट्य परिषद् का पहला सचिव था। एक दिन नाट्य परिषद् के काम से उत्साहित होकर बी.एन.कॉलेज के प्रिंसिपल एस.के. बोस साहब ने मुझे एक पुस्तक भेंट की और वह पुस्तक थी 'आवारा मसीहा'। और बाद में अचानक बिल्कुल अपने सामने उस पुस्तक के लेखक को पाकर मेरा मन आह्लाद से भर उठा। हमलोग विष्णु जी से मिले। एक छोटी सी बैठक हुई पटना के एस.पी.वर्मा रोड में। एक नाट्य संस्था की तरफ से यह बैठक आयोजित की गयी थी। वहां विष्णु प्रभाकर ने यह बताया कि कैसे शरतचंद्र के जीवन के बारे में जानने के लिए वे 14 वर्षों तक लगातार दर–दर भटकते रहें, वे कहाँ –कहाँ गए। एक–डेढ़ घंटे की उस बैठक में वे ये सारी बातें सुनाते रहें और हम मंत्रमुग्ध होकर बिल्कुल बच्चे की तरह उनके सामने बैठे हुए उनके मुख से सुनते रहें। यह मेरे जीवन का एक दुर्लभ अनुभव था। साथ–साथ मुझे ये लगा कि एक पुस्तक लिखने के लिए एक बड़ा लेखक जब इतना श्रम करता है तो साहित्य की जो यात्रा है वो कितनी कठिन है, किस तरह के समर्पण एवं निष्ठा की मांग करती है। तो इस विद्या को बहुत हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। तब विष्णु जी को सुनते हुए यही सब अपने मन में अर्जित करता रहा। विष्णु प्रभाकर जी को सुनना यह मेरे जीवन की बहुत बड़ी घटना थी। क्यूंकि

वो नयी उमर थी, हर चीज के प्रति आकर्षण था। कभी यहाँ कभी वहां, कभी इस काम को छोड़कर कभी उस काम में लग जाना जो युवाओं में एक अधीरता या जल्दबाजी होती है वो सब मेरे अंदर भी थी। तो उनकी बातों ने मुझे बहुत स्थिरचित्त किया, शांत किया और मुझे इसकी सीख दी कि किसी भी काम को करने के लिए आपको लगातार बने रहना है। साहित्य में अगर आपको महत्वपूर्ण लिखना है तो आपको पूरी तरह उसमे उतरना होगा। यही वजह थी कि तब आकाशवाणी जैसे ग्लैमरस संस्थान में नौकरी करते हुए भी रेडिओ मेरा मुख्य चुनाव नहीं रहा, वो सिर्फ मेरी नौकरी करने की जगह थी। वहां मैं ईमानदारी से अपना काम भर करता रहा और निरंतर लिखता रहा। तब विष्णु जी के भाषण ने मेरे अंदर बहुत गहरा प्रभाव डाला। मैं आज भी कभी–कभी सोचता हूँ कि अगर तब विष्णु प्रभाकर को नहीं सुना होता तो शायद मैं कुछ और कर रहा होता। क्यूंकि तब साहित्य के प्रति उत्सुकता एवं लालसा तो थी मगर स्थायित्व नहीं था।

जीवन संगिनी से सम्बंधित वाक्या मुझे याद आता है। पत्नी मीनू से एक विवाह समारोह में मेरी मुलाकात हुई थी। तब वे बी.ए. की छात्रा थीं और मैं एम.ए. कर रहा था। मुझे पता चला कि उन्हें साहित्य के प्रति रूचि है। उन दिनों 'रविवार' पत्रिका जो कोलकाता के आनंद बाजार ग्रुप की पत्रिका थी में मैंने कुछ रिपोर्टें लिखी थीं। जमशेदपुर में हुए दंगे पर, गांव में नाच करनेवालों पर, खून के व्यापार पर लिखी रिपोर्टें तब चर्चित रही थीं। मुझे पता चला कि मीनू ये सारी चीजों को पढ़ती आयी हैं। फिर एक लेखक और एक पाठिका के रूप में हमदोनो की जान–पहचान हुई जो आगे चलकर अच्छी दोस्ती में तब्दील हो गयी। तब शायद वो मेरी लेखनी से आकर्षित थीं और मैं उनके स्वभाव से। तब मीनू जी हमसे बहुत दूर एक छोटे से शहर में रहती थीं और मैं राजधानी पटना में रहता था। तब हमलोगों के बीच बहुत खुला एवं बहुत गहन प्रेम नहीं था। जो भी था भीतर ही भीतर एक राग था एक शांत नदी की तरह। तब हमारे मध्यम वर्गीय समाज में वैसा खुलापन भी नहीं था और हमारी बहुत मुलाकातें भी नहीं होती थीं। लेकिन हमदोनों के परिवार पहले से परिचित थें। उन्हें लगा कि दोनों साझा जीवन जी सकते हैं तब मेरे पिता ने इस सम्बन्ध में मुझसे बातें की और मैंने हामी भर दी। फिर हमारा विवाह संपन्न हुआ। मेरी साहित्यिक यात्रा में मेरी पत्नी का शुरू से लेकर आजतक भरपूर सहयोग मिला और वे शुरू से ही अच्छी एवं गंभीर पाठिका रहीं। उन्होंने मुझे पर्याप्त अवकाश दिया पढ़ने–लिखने एवं मेरी साहित्यिक यात्राओं के लिए।

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

❐

21 साले-सालियों के साथ फिल्म देखने जाना गजब ढ़ा गया :

बीरेंद्र बरियार 'ज्योति', वरिष्ठ पत्रकार एवं चित्रकार

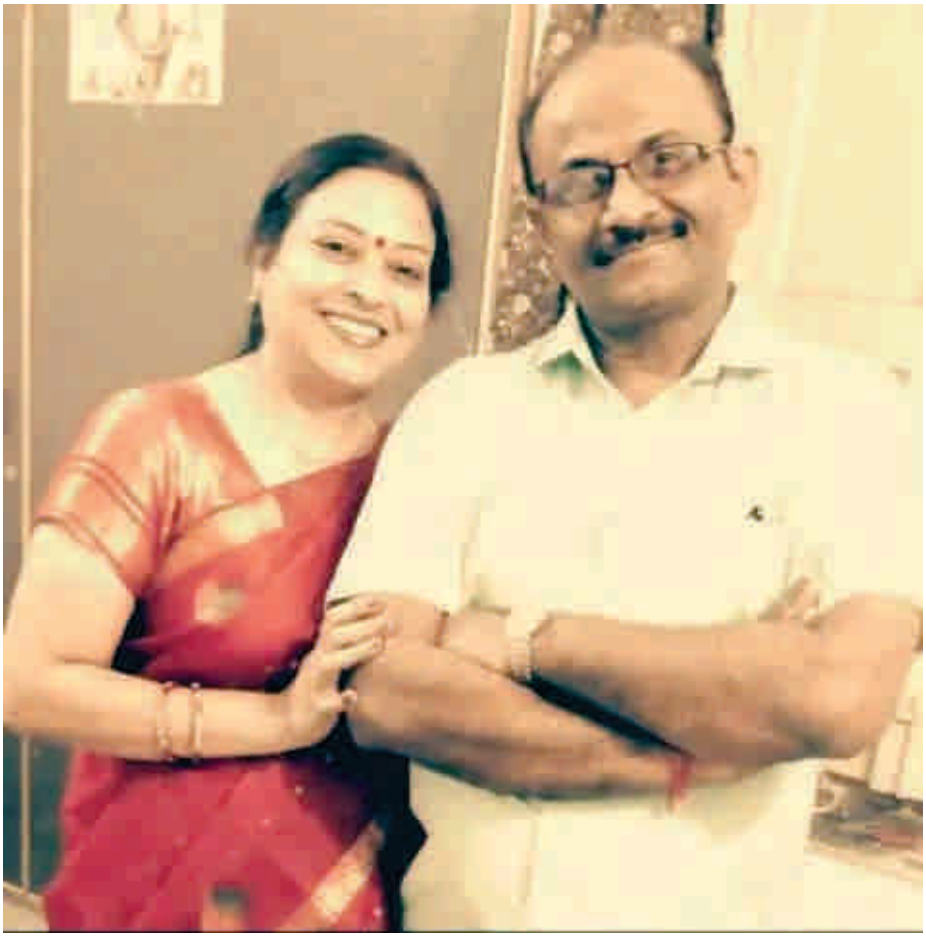

1993 में मेरी शादी पटना के कदमकुआं मोहल्ले में रहनेवाली अनुपम राज से हुई। हमारे ससुर जी 5 भाई और 5 बहन थें। पांचों भाई एक ही मकान में साथ रहते थें। मेरी पत्नी के पापा दस भाई–बहनों में सबसे बड़े थें। मेरी पत्नी उनकी बड़ी बेटी थी। उस जेनरेशन से परिवार में पहली शादी उसी की हुई। ससुराल में मेरे कुल 21 साला–साली हैं।

शादी के बाद जब पहली दफा मैं ससुराल गया तो फिर हमलोगों का बाहर घूमने का प्लान बना। मैं, मेरी पत्नी और सभी 21 साले–सालियाँ फिल्म 'हम आपके हैं कौन?' देखने गए। ज्यादातर साले–सालियों की तब उम्र 5 से 15 साल के ही बीच थी। सभी का टिकट एक जगह नहीं मिल पाया लिहाजा सिनेमा देखने के दौरान सभी को हॉल में इधर–उधर बैठना पड़ा। जिसे जहाँ टिकट मिला वहां बैठ गया। कोई पूरब कोने में तो कोई पश्चिम कोने में बैठा। मैंने सबके लिए पॉपकॉर्न और कोल्ड्रिंक्स के ऑर्डर दे रखे थें। कुछ देर बाद मुझे बड़ी विचित्र स्थिति का सामना करना पड़ा।

थोड़ी थोड़ी देर पर कोई साला चिल्लाता कि 'जीजा जी मुझे भी कोल्ड्रिंक्स पीना है'। किसी कोने से कोई साली चिल्लाती कि 'जीजा जी मुझे पॉपकॉर्न नहीं मिला।' पूरी फिल्म के दौरान सभी हॉल में धमा चौकड़ी मचाते रहे और सिनेमा देखने का मजा किरकिरा करते रहें। तब शादी के शुरूआती दिनों में मुझे जीजा जी सुनने की आदत नहीं पड़ी थी। मुझे सिनेमा हॉल में जीजा जी सुनकर काफी शर्म आ रही थी। हॉल के सभी दर्शक गुस्से से मुझे देख रहे थें। कुछ एक झल्लाहट भरी आवाज में कह रहे थें 'किन किन लोगों को लेकर आ गया है हॉल में !' इधर–उधर से जीजा जी सुनने के बाद भी झेंपते हुए मैं सिनेमा देखने का नाटक करता रहा। सोच रहा था कि जल्दी सिनेमा खत्म हो और मैं भागूँ यहाँ से। मैंने अपनी पत्नी से कहा कि 'सब को संभालो, शांत रहने को कहो।' लेकिन हालात ऐसे थें कि पत्नी भी चाहकर कुछ ना कर सकी। सिनेमा हॉल से निकलकर ससुराल लौटने के बाद मैंने कान पकड़ा कि आईन्दा से सभी साले–सालियों को लेकर कोई फिल्म देखने नहीं जाऊंगा। ❐

इतिहास की गवाही देता आमेर दुर्ग

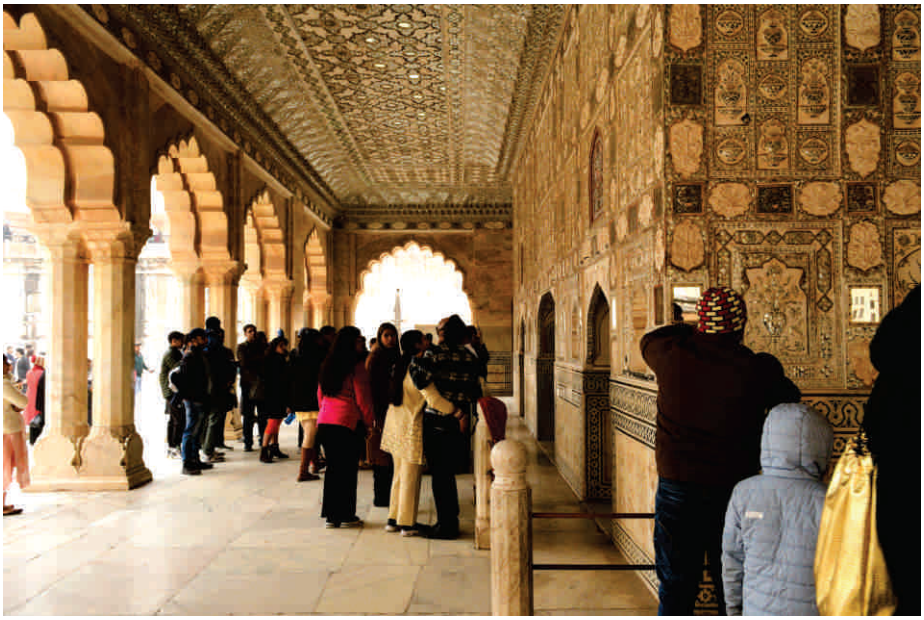

✍ डॉ. किशोर सिन्हा
वरिष्ठ नाटककार और मीडिया–विशेषज्ञ

आमेर दुर्ग (जिसे आमेर का क़िला या आंबेर का क़िला नाम से भी जाना जाता है), राजस्थान की राजधानी जयपुर में एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित पर्वतीय दुर्ग है। आमेर के बसने से पहले इस जगह मीणा जनजाति के लोग रहते थे, जिन्हें कछवाहा राजपूतों ने अपने अधीन कर लिया था। यह दुर्ग अपने कलात्मक विशुद्ध हिन्दू वास्तु शैली के घटकों के लिये भी जाना जाता है। लाल बलुआ पत्थर एवं संगमरमर से निर्मित यह आकर्षक, भव्य दुर्ग चार स्तरों पर निर्मित है, जिसमें से प्रत्येक का एक विशाल प्रांगण है। इसमें दीवान–ए–आम अर्थात् जन साधारण का प्रांगण, दीवान–ए–ख़ास अर्थात् विशिष्ट प्रांगण, शीश महल या जय मन्दिर एवं सुख–निवास– चार भाग हैं। यह महल कछवाहा राजपूत महाराजाओं एवं उनके परिवारों का निवास–स्थान हुआ करता था। आमेर दुर्ग यूनेस्को द्वारा 'विश्व धरोहर स्थल' घोषित है।

आंबेर या आमेर को यह नाम यहां निकटस्थ चील के टीले नामक पहाड़ी पर स्थित अम्बिकेश्वर मन्दिर से मिला भी बताया जाता है। अम्बिकेश्वर नाम भगवान शिव के उस रूप का है जो इस मन्दिर में स्थित है, अर्थात् अम्बिका के ईश्वर। यहां के कुछ स्थानीय लोगों एवं किंवदन्तियों के अनुसार दुर्ग को यह नाम माता दुर्गा के पर्यायवाची अम्बा से मिला है। इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार यहां के राजपूत स्वयं को अयोध्यापति राजा रामचन्द्र के पुत्र कुश के वंशज मानते हैं, जिससे उन्हें कुशवाहा नाम मिला जो कालांतर में कछवाहा हो गया।

किंवदंतियां यों तो बहुत–सी हैं, पर टॉड एवं कन्निंघम, दोनों ने ही अम्बिकेश्वर नामक शिव–स्वरूप से ही इसका नाम व्युत्पन्न माना है।

आमेर जयपुर से 11 कि.मी. उत्तर में स्थित एक कस्बा है, जिसका विस्तार 4 वर्ग किलोमीटर में है। दुर्ग यहां की एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है और इसकी प्राचीरों, द्वारों की शृंखलाओं एवं पत्थर के बने रास्तों से भरा ये दुर्ग पहाड़ी के ठीक नीचे बने मावठा सरोवर को निहारता प्रतीत होता है।

इतिहासकार जेम्स टॉड के अनुसार इस क्षेत्र को पहले 'खोगोंग' नाम से जाना जाता था। तब यहां मीणा राजा रलुन सिंह जिसे एलान सिंह चन्दा भी कहा जाता था, का राज था। वह बहुत ही नेक और अच्छा राजा था। उसने एक असहाय एवं बेघर राजपूत माता और उसके पुत्र को शरण मांगने पर अपना लिया। कालान्तर में मीणा राजा ने उस बच्चे ढोला राय (दूल्हेराय) को बड़ा होने पर मीणा रजवाड़े के प्रतिनिधि–स्वरूप दिल्ली भेजा। मीणा राजवंश के लोग सदा ही शस्त्रों से सज्जित रहा करते थे, अतः उन पर आक्रमण करना और हराना आसान नहीं था। किन्तु वर्ष में केवल एक बार, दीवाली के दिन वे यहां बने एक कुण्ड में अपने शस्त्रों को उतार कर अलग रख देते थे तथा स्नान एवं पितृ–तर्पण किया करते थे। ये बात अति गुप्त रखी जाती थी, किन्तु ढोलाराय ने एक ढोल बजाने

वाले को ये बात बता दी जो आगे अन्य राजपूतों में फैल गयी। तब दीवाली के दिन घात लगाकर राजपूतों ने उन निहत्थे मीणाओं पर आक्रमण कर खोगोंग पर आधिपत्य प्राप्त किया।

इसका पहला निर्माण राजा कांकिल देव ने 1036 में आमेर के अपनी राजधानी बन जाने पर करवाया। यह आज के जयगढ़ दुर्ग के स्थान पर था। आज दिखने वाली यहां की अधिकांश इमारतें राजा मान सिंह प्रथम (दिसम्बर 21, 1550–जुलाई 6, 1614 ई०) के शासन में 1600 ई० के बाद बनवायी गयी थीं। उनमें से कुछ प्रमुख इमारतें हैं– आमेर महल का दीवान–ए–ख़ास और अत्यधिक सुन्दरता से चित्रित किया हुआ गणेश पोल द्वार, जिसका निर्माण राजा जय सिंह प्रथम ने करवाया था।

वर्तमान आमेर महल को 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बनवाया गया जो वहां के शासकों के निवास के लिये पहले से ही बने प्रासाद का ही एक प्रकार से विस्तार है। यहां का पुराना प्रासाद, जिसे 'कादिमी महल' कहा जाता है (प्राचीन का फ़ारसी अनुवाद) भारत के प्राचीनतम विद्यमान महलों में से एक है। यह प्राचीन महल आमेर महल के पीछे की घाटी में बना हुआ है।

यह महल चार मुख्य भागों में बंटा हुआ है, जिनमें प्रत्येक के अलग–अलग प्रवेशद्वार एवं प्रांगण हैं। मुख्य प्रवेश सूरज पोल द्वार से है जिससे जलेब चौक में आते हैं। यह द्वार पूर्वाभिमुख था एवं इससे उगते सूर्य की किरणें दुर्ग में प्रवेश पाती थीं, अतः इसे सूरज पोल कहा जाता था। सेना के घुड़सवार आदि एवं शाही गणमान्य व्यक्ति महल में इसी द्वार से प्रवेश पाते थे।

जलेब चौक

जलेब चौक अरबी भाषा का एक

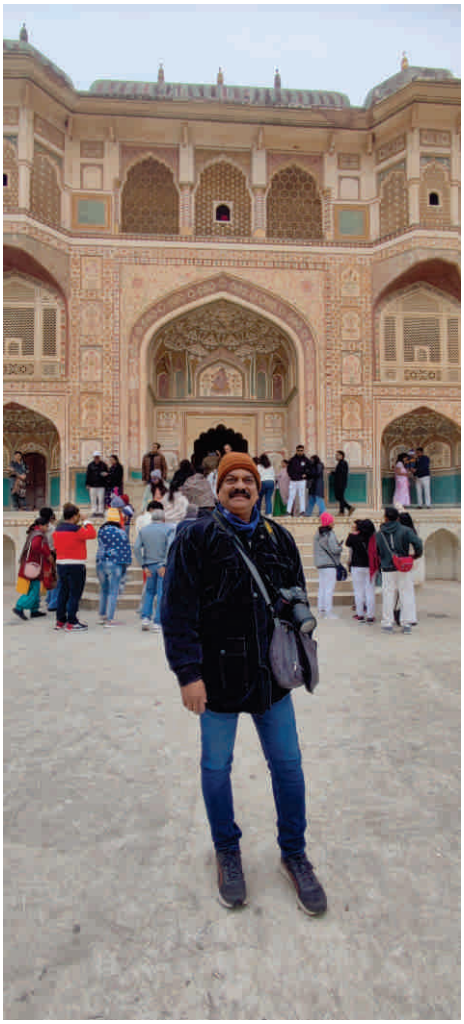

शब्द है, जिसका अर्थ है सैनिकों के एकत्र होने का स्थान। यह आमेर महल के चार प्रमुख प्रांगणों में से एक है जिसका निर्माण सवाई जय सिंह के शासनकाल (1693–1743 ई०) के बीच किया गया था। यहां सेना नायकों की कमान में, जिन्हें 'फौज बख़्शी' कहते थे, महाराजा के निजी अंगरक्षकों की परेड भी आयोजित हुआ करती थी। महाराजा उन रक्षकों की टुकड़ियों की सलामी लेते और निरीक्षण किया करते थे। इस प्रांगण के बगल में ही अस्तबल बना है, जिसके ऊपरी तल पर अंगरक्षकों के निवास स्थान थे।

जलेब चौक से एक सीढ़ीनुमा रास्ता महल के मुख्य प्रांगण को जाता है। यहां प्रवेश करते हुए दायीं ओर शिला देवी मन्दिर के लिए रास्ता इसके निकट ही शिरोमणि का वैष्णव मन्दिर है। इस मन्दिर का तोरण श्वेत संगमरमर का बना है और उसके दोनों ओर दो हाथियों की जीवन्त प्रतिमाए हैं।

गणेश पोल

अगला द्वार है गणेश पोल, जिसका नाम भगवान गणेश पर है। भगवान गणेश विघ्नहर्ता माने जाते हैं और प्रथम पूज्य भी हैं, अतः महाराजा के निजी महल का प्रारम्भ यहां से होने पर यहां उनकी प्रतिमा भी स्थापित है। यह एक त्रि–स्तरीय इमारत है, जिसका अलंकरण राजा जय सिंह (1621–1627 ई०) के आदेशानुसार किया गया था। इस द्वार के ऊपर सुहाग मन्दिर है, जहां से राजवंश की महिलायें दीवान–ए–आम में आयोजित हो रहे समारोहों का दर्शन झरोखों से किया करती थीं। इस द्वार की नक्काशी अत्यन्त आकर्षक है। द्वार से जुड़ी दीवारों पर कलात्मक चित्र बनाए गए हैं। इन चित्रों के बारे में कहा जाता है कि उन महान् कारीगरों की कला से मुगल बादशाह जहांगीर इतना नाराज़ हो गया कि उसने इन चित्रों पर चूने–गारे की पर्त चढ़वा दी थी। कालान्तर में पर्त के प्लास्टर उखड़ने लगे और अब ये चित्र कुछ–कुछ दिखाई देने लगे हैं। जलेबी चौक के दायीं ओर एक छोटा किन्तु भव्य मन्दिर है जो कछवाहा राजपूतों की कुलदेवी शिला माता को समर्पित है।

आमेर दुर्ग का दीवान–ए–आम 27 स्तंभों की दोहरी कतार से घिरा प्रांगण है। प्रथम प्रांगण से मुख्य सीढ़ी द्वारा द्वितीय प्रांगण में पहुंचते हैं, जहां दीवान–ए–आम बना हुआ है। इसका प्रयोग जनसाधारण के दरबार हेतु किया

जाता था। दोहरे स्तंभों की कतार से घिरा दीवान–ए–आम संगमरमर के एक ऊंचे चबूतरे पर बना लाल बलुआ पत्थर के 27 स्तंभों वाला हॉल है। इसके स्तंभों पर हाथी रूपी स्तंभशीर्ष बने हैं एवं उनके ऊपर चित्रों की श्रेणी बनी है। इसके नाम अनुसार राजा यहां स्थानीय जनसाधारण की समस्याएं, विनती एवं याचिकाएं सुनते एवं उनका निवारण किया करते थे।

तीसरा प्रांगण–शीश–महल

में महाराजा, उनके परिवार के सदस्यों एवं परिचरों के निजी कक्ष बने हुए हैं। इस प्रांगण का प्रवेश गणेश पोल द्वार से मिलता है। गणेश पोल पर उत्कृष्ट स्तर की चित्रकारी एवं शिल्पकारी है। इस प्रांगण में दो इमारतें एक–दूसरे के आमने–सामने बनी हैं। इनके बीच में मुगल उद्यान शैली के बाग बने हुए हैं। प्रवेशद्वार की बायीं ओर की इमारत को जय मन्दिर कहते हैं। यह महल दर्पण जड़े फलकों से बना हुआ है एवं इसकी छत पर भी बहुरंगी शीशों का उत्कृष्ट प्रयोग कर अतिसुन्दर मीनाकारी और चित्रकारी की गयी है। ये दर्पण और शीशे के टुकड़े अवतल हैं और रंगीन चमकीले धातु–पत्रों से मंडित हैं। इसलिए ये मोमबत्ती के प्रकाश में तेज चमकते एवं झिलमिलाते हुए दिखाई देते हैं। उस समय यहां मोमबत्तियों का ही प्रयोग किया जाता था। इसीलिए इसे शीश–महल की संज्ञा दी गयी है।

शीश महल का निर्माण मान सिंह ने 16वीं शताब्दी में करवाया था और ये 1727 ई० में पूर्ण हुआ। यह जयपुर राज्य का स्थापना–वर्ष भी था। हालांकि यहां का अधिकांश काम 1970–80 के दशक में नष्ट–भ्रष्ट होता चला गया। हालांकि बाद में इसके पुनरोद्धार एवं नवीनीकरण की कोशिश शुरू हुई और बहुत हद तक इसकी

पुरानी भव्यता को सुरक्षित कर लिया गया।

सुख महल

इस प्रांगण में बनी दूसरी इमारत जय मन्दिर के सामने है और इसे सुख निवास या सुख महल नाम से जाना जाता है। इस कक्ष का प्रवेशद्वार चंदन की लकड़ी से बना है और इसमें जालीदार संगमरमर का कार्य है। नलिकाओं (पाइपों) द्वारा लाया गया जल यहां एक खुली नाली द्वारा बहता रहता था, जिसके कारण भवन का वातावरण शीतल बना रहता था– ठीक आज के वातानुकूलित भवनों की तरह। इन नालियों के बाद यह जल उद्यान की क्यारियों में जाता है। इस महल का एक विशेष आकर्षण है डोली महल, जिसका आकार एक डोली की भांति है, जिनमें तब राजपूत महिलाएं कहीं भी आना–जाना किया करती थीं। इन्हीं महलों में प्रवेश–द्वार के अन्दर डोली महल से पहले एक भूल–भूलैया भी बनी है, जहां महाराजा अपनी रानियों और पटरानियों के संग हंसी–ठिठोली करते और आंख–मिचौनी का खेल खेला करते थे। राजा मान सिंह की कई रानियां थीं और जब वे युद्ध से लौटकर आते थे तो सभी रानियों में सबसे पहले उनसे मिलने की होड़ लगा करती थी। ऐसे में राजा मान सिंह इस भूल–भूलैया में घुस जाया करते और इधर–उधर घूमते रहते थे। जो रानी उन्हें सबसे पहले ढूंढ़ लेती, उसे ही प्रथम मिलन का सुख प्राप्त होता था।

जादुई पुष्प

जादुई पुष्प आमेर दुर्ग के स्तंभों में संगमरमर में उकेरा हुआ अद्भुत एवं अनोखे डिजाइन हैं।

यह स्तंभाधार एक तितली के जोड़े को दिखाता है जिसमें पुष्प–जैसे सात विशिष्ट एवं अनोखे डिजाइन हैं। इनमें मछली की पूंछ, कमल, नाग का फण, हाथी की सूंड़, सिंह की पूंछ एवं बिच्छू के रूपांकन हैं; जिनमें से कोई एक वस्तु हाथों से एक विशेष प्रकार से ढंकने पर कुछ प्रतीत होती है तो दूसरे प्रकार से ढंकने पर दूसरी वस्तु प्रतीत होती है।

मान सिंह प्रथम का महल

इस प्रांगण के दक्षिण में मानसिंह प्रथम का महल है और यह

महल का पुराना भाग है। इस महल को बनाने में 25 वर्ष लगे एवं यह राजा मान सिंह प्रथम के काल में (1589–1614 ई०) में 1599 ई० में बन कर तैयार हुआ। यह यहां का मुख्य महल है। इसके केन्द्रीय प्रांगण में स्तंभों वाली बारादरी है, जिसका भरपूर अलंकरण रंगीन टाइलों एवं भित्तिचित्रों द्वारा निचले और ऊपरी, दोनों ही तलों पर किया गया है। इस महल के एकान्त को बनाये रखने के लिए इसे पर्दों से ढंका जाता था जिसका प्रयोग यहां की महारानियां (राजसी परिवार की स्त्रियां) अपनी बैठकों एवं आपस में मिलने–जुलने के लिए किया करती थीं। इस मण्डप के बाहरी तरफ़ खुले झरोखे वाले छोटे–छोटे कक्ष हैं। इस महल से निकास का मार्ग विभिन्न मन्दिरों, हवेलियों एवं कोठियों वाले पुराने आमेर शहर की ओर जाता है।

त्रिपोलिया द्वार

यहां की स्थानीय भाषा में पोल का अर्थ द्वार होता है, तो त्रिपोलिया अर्थात् तीन दरवाज़ों वाला द्वार। यह पश्चिमी ओर से महल में प्रवेश का रास्ता है जो तीन तरफ़ खुलता है– एक जलेब चौक को, दूसरा मान सिंह महल को एवं तीसरा दक्षिण में बनी जनाना ड्योढ़ी की ओर।

सिंह द्वार

सिंह द्वार विशिष्ट द्वार है जो कभी संतरियों द्वारा सुरक्षित रहा करता था। इस द्वार से महल परिसर के निजी भवनों की ओर प्रवेश मिलता है और इसकी सुरक्षा एवं सशक्त होने के कारण ही इसे सिंह द्वार कहा जाता था। सवाई जय सिंह (1699–1743 ई०) के काल में बना यह द्वार भित्ति चित्रों से अलंकृत है और इसे टेढ़ा–मेढ़ा बनाया गया है, ताकि किसी आक्रमण की स्थिति में आक्रमणकारियों को यहां सीधा प्रवेश नहीं मिल पाये।

चतुर्थ प्रांगण

चौथे प्रांगण में राजपरिवार की महिलायें निवास करती थीं। इनके अलावा रानियों की दासियां और राजा की उपस्त्रियां भी यहीं निवास करती थीं। इस भाग में बहुत से कक्ष बने हैं जो एक ही गलियारे में खुलते हैं।

यहां 'जस मन्दिर' नाम से एक निजी कक्ष भी है, जिसमें कांच के फूलों की महीन कारीगरी के साथ–साथ सिलखड़ी या संगमरमरी खड़िया (प्लास्टर ऑफ पैरिस) की उभरी हुई उत्कृष्ट नक्काशी भी मिलती है।

आमेर का कस्बा इस दुर्ग एवं महल का अभिन्न एवं अपरिहार्य अंग होने के साथ–साथ इसका प्रवेशद्वार भी है। यह कस्बा अब एक धरोहर–स्थल बन गया है तथा इसकी अर्थ–व्यवस्था अधिकांश रूप से यहां आने वाले पर्यटकों की बड़ी संख्या– लगभग 4000 से 5000 प्रतिदिन– पर निर्भर रहती है।

फिल्मों की शूटिंग

आमेर दुर्ग बहुत–सी हिन्दी फिल्मों का गवाह रहा है। फिल्म 'बाजीराव मस्तानी' के गीत, 'मोहे रंग दो लाल....' पर अभिनेत्री दीपिका पादुकोण का कत्थक नृत्य इसी दुर्ग की पृष्ठभूमि में फिल्माया गया है। इसके अलावा 'मुगले आज़म', 'जोधा अकबर', 'शुद्ध देसी रोमांस', 'भूल भुलैया' जैसी कई बॉलीवुड फिल्मों के अलावा, कुछ हॉलीवुड फिल्मों, 'नार्थ वेस्ट फ्रंटियर', 'द बेस्ट एग्जॉटिक' आदि फिल्मों की शूटिंग भी यहां हो चुकी है।

एक बार एक फिल्म की शूटिंग के दौरान 500 वर्ष पुराना झरोखा गिर गया तथा चांद महल की पुरानी चूनेपत्थर की छत को भी क्षति पहुंची थी। फिल्म कंपनी ने अपने सेट्स खड़े करने के लिए यहां ड्रिल किये थे तथा जलेब चौक पर ख़ूब रेत भी फैलायी थी। इसे राजस्थान स्मारक एवं पुरातात्त्विक स्थल एवं एन्टीक अधिनियम (1961) की उपेक्षा एवं उल्लंघन माना गया था और उचित कार्रवाई भी की गई थी।

कैसे पहुंचें

आमेर क़िला एक प्रकार से जयपुर शहर के केन्द्र में है। क़िले के आधार तक पहुंचना अत्यंत सरल है। इसके लिये किराये की टैक्सी, ऑटोरिक्शा, नगर बस सेवा या निजी कार द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है। ❐

देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद उर्दू और फारसी के जानकार थे

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा, अपनी सेवा, लगन और साधनामय जीवन, विशाल एवं विलक्षण व्यक्तित्व, योग्यता, नम्रता, सच्चाई, सरलता, निस्पृहता और स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म बिहार राज्य के सारण जिला स्थित जीरादेई ग्राम में 03 दिसम्बर, 1884 को एक सम्पन्न कायस्थ परिवार में हुआ था। उनकी ऐसी कहानी आज भी इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उनका जीवन वस्तुतः मानसरोवर के जल से भी ज्यादा पवित्र और निर्मल था। बिहार की पुण्य सलिला भूमि को इस बात का गौरव है कि उसने डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जैसे रत्न को पैदा किया।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के पिता महादेव सहाय भी उदारता, करूणा और कर्तव्यनिष्ठता के मूर्तस्वरूप थे। फारसी और संस्कृत के अच्छे विद्वान, आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का गहरा अध्ययन, करने के कारण एक सुदक्ष वैद्य के रूप में प्रसिद्ध थे, जिसके कारण इनसे चिकित्सा कराने के लिए दूर–दराज के रोगी आया करते थे और वे सभी का निःशुल्क चिकित्सा करते थे।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की माता एक धर्मपरायण महिला थी। नित्य सुबह बालक राजेन्द्र प्रसाद को रामायण और गीता का पाठ–भजन सुनाया करती थीं, जिसका राजेन्द्र प्रसाद के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा था।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का अक्षराम्भ एक मौलवी साहब ने कराया था इसलिए वे उर्दू और फारसी की जानकार थे। वर्ष 1902 में उन्होंने अपनी लगन, प्रतिभा और

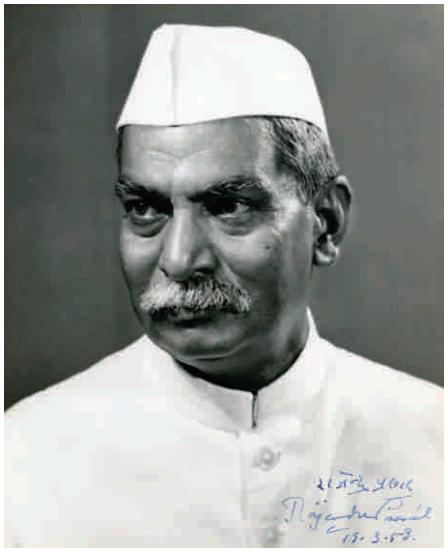

परिश्रम के कारण मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उन दिनों कलकत्ता विश्व विद्यालय पूरे उत्तर–पूर्व भारत अर्थात् बंगाल, बिहार, उड़ीसा और आसाम का प्रमुख शिक्षा केन्द्र था। विश्वविद्यालय के इतिहास में यह पहला अवसर था जब कोई बिहारी विद्यार्थी प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उसके बाद उन्होंने आगे की पढ़ाई कलकत्ता के प्रेसिडेन्सी कॉलेज से की, जहाँ से उन्होंने एम०ए० और बी०एल० की परीक्षा पास की। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०एल० की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद विद्यार्थी जीवन से ही लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, अरविन्द घोष, मदन मोहन मालवीय, दादा भाई नैरोजी जैसे नेताओं के भाषणों को सुना

करते थे तथा कांग्रेस के प्रति मन में अपार श्रद्धा रहती थी। वर्ष 1912 के अप्रैल से बिहार नया प्रांत बना और 1916 में पटना उच्च न्यायालय खुलने के बाद से सभी बिहारी वकील कलकत्ता से पटना आ गए। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद भी उनके साथ पटना आकर वकालत करने लगे थे।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 1917–18 में महात्मा गाँधी के चम्पारण आने पर चम्पारण के पूरे दौरे पर महात्मा गाँधी के साथ रहे थे। वर्ष 1906 में कलकत्ता में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में उन्होंने स्वयंसेवक के रूप में काम किया था और पहली बार उन्होंने सरोजनी नायडू, मदन मोहन मालवीय और मोहम्मद अली जिन्ना के भाषण सुने थे। कलकत्ता में जब दूसरी बार 1911 में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो उसमें बकायदा उसके सदस्य बन गये थे। उसके बाद वे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सदस्य निर्वाचित हुए।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में बिहार के असंख्य कार्यकर्ता स्वराज्य और असहयोग के संदेश को गाँव–गाँव में पहुँचाने के काम में पूरी तरह से लग गये। उन्होंने वर्ष 1918 में बिहार के प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक ''सर्चलाईट'' की स्थापना की। एक हिन्दी साप्ताहिक ''देश'' का प्रकाशन किया और विद्यापीठ की स्थापना की। वे 1924 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति बने तथा 1926 में बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी बनाये गये थे।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने वर्ष 1930 में नमक सत्याग्रह में बिहार में आन्दोलन को सफल बनाया था। जिलों का दौरा करके, कार्यकलापों का निरीक्षण करके, आम सभाओं में व्याख्यान देकर और सत्याग्रहियों को प्रोत्साहित कर बिहार में इस आन्दोलन का नेतृत्व किया था। कांग्रेस का 48वाँ अधिवेशन बम्बई में हुआ था और डॉ० राजेन्द्र प्रसाद इसके अध्यक्ष बनाये गये थे। उन्होंने अपने सभापतित्व काल में गाँधी जी को कांग्रेस के दिन–प्रतिदिन के कार्यों से प्रायः मुक्त कर दिया था। देश और यूरोप के द्वितीय महायुद्ध की भयानक स्थिति के संदर्भ में 8 अगस्त 1942 की रात में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव स्वीकृत किया था जिसमें गांधी जी के ''करो या मरो'' मंत्र के साथ देश को आह्वान किया गया था। इस समय पटना के सदाकत आश्रम में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद अस्वस्थ थे। किन्तु उनकी अस्वस्थता के बावजूद उन्हें गिरफ्तार कर बांकीपुर जेल भेज दिया गया था। उन्हें लगभग 3 वर्षों तक जेल में रहना पड़ा।

चुनाव और अन्तरिम सरकार की स्थापना में अनेको राजनैतिक उलट–फेर और परिवर्तन के बाद 02 सितम्बर 1946 को भारत में अन्तरिम सरकार की स्थापना हुई थी। इस सरकार में 12 मंत्री मनोनीत हुए जिसमें डॉ० राजेन्द्र प्रसाद भी एक थे और इन्हें देश का कृषि और खाद्य मंत्री का दायित्व सौंपा गया था। उस समय देश में भयंकर खाद्य संकट उत्पन्न था। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने देश को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से लोगों को कृषि उत्पादन के साथ–साथ दूध, मछली, मांस, तेल, फल एवं साग– सब्जियों का उत्पादन बढ़ाने की भी सलाह दी थी और इस प्रयास से अन्न संकट को कम करने में काफी सफलता मिली थी।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद सर्वसम्मति से 11 दिसम्बर 1946 को संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गये थे। उसके बाद 26 जनवरी, 1950 को भारतीय गणतंत्र के अंतरिम राष्ट्रपति मनोनीत हुए थे। वर्ष 1952 में देश में प्रथम आम चुनाव हुआ और भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति विधिवत निर्वाचित हुए। इस समय भारत कठिन और संक्रामक रूप से गुजर रहा था। देश में रूढ़ियों, अंध–विश्वासों, अशिक्षा, बेरोजगारी आदि सैंकड़ों बुराईयाँ व्याप्त थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने पद की गरीमा, धीरता, गम्भीरता, दूरदर्शिता जैसे विलक्षण, बुद्धिसम्पन्न, चरित्रवान, मेधावी, बलबूते की बदौलत आडम्बर और तड़क भड़क से उपर उठकर सादगी, प्रेम, सच्ची सेवा, शिष्टाचार के साथ महत्वपूर्ण मामलों में सदैव रूचि लेते रहे थे।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के भव्य व्यक्तित्व और शालीनता के कायल थे विदेशी नागरिक । राष्ट्रनायक, कवि, कलाकार, वैज्ञानिक, जो विदेशों से आकर उनसे मिलते थे। जेनेवा विश्व पार्लियामेंट्री सम्मेलन के महामंत्री आन्द्रेनो ने उनसे मिलने के बाद कहा था कि – ''डॉ० राजेन्द्र प्रसाद अत्यन्त विनम्र व्यक्ति है। उनकी विनम्रता उनकी आकृति पर स्पष्ट अंकित रहती है। जब मैं उनसे हाथ मिला रहा था तो उसी समय मुझे मालूम हो गया कि यह कितनी बड़ी बात शक्ति है जो राख में ढकी आग जैसी लगी और लगा की उनकी विनम्रता के भीतर कोई अप्रतिम महत्ता मुझे झांक रही हो। मैंने अनेक महापुरूषों से हाथ मिलाया, पर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद से हाथ मिलाने की बात कभी नहीं भूल सकता।''

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने 12 वर्षों तक राष्ट्रपति पद को सुषोभित किया, अलंकृत किया और राष्ट्रपति पद की गुण–गरिमा को बढ़ाया। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के संबंध में डॉ० राधाकृष्णन की उक्ति थी कि ''उनमें जनक, बुद्ध, और महात्मा गाँधी की छाप थी'' अक्षरशः सत्य है।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद पटना आकर सदाकत आश्रम में रहने लगे और फिर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, स्वाधीनता की प्राप्ति, गणराज्य की स्थापना और उसके बाद 12 वर्षों तक देश के राष्ट्रपति रहने के बाद दिनांक 28 फरवरी, 1963 को पटना स्थित सदाकत आश्रम में स्वाधीनता के इस साधक का स्वर्गवास हो गया।

❐

मैं गाँव में बहुत कम रहा पर गाँव मेरे भीतर हमेशा रहा

✍ मनोज भावुक
भोजपुरी सिनेमा के इतिहासकार,
फिल्म गीतकार व
भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक

मुझे याद है, जब मैं छठवाँ–सातवाँ में पढ़ रहा था, माई हर साल गरमी और जाड़ा की छुट्टियों में बहरा से गाँवे चली जाती थी। इसके अलावा भी महीने–दो महीने पर गाँवे चलिए जाती थी। उसका परान गाँव हीं में बसता था।

मैं नया–नया शहर में आया था। शहर माने रेनूकूट, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश। मुझे ऐसा लगता था कि गाँव में बुरबक या मजबूर लोग रहते हैं। जो चाल्हाक हैं, तेज हैं, सफल हैं, प्रतिभावान हैं, वह शहर की ओर भागते हैं, शहर में बसते हैं। शहर में बिल्डिंग पिटवाते हैं, घर खरीदते हैं। क्या कहूँ अपनी लड़कबुद्धि के बारे में। खैर, बाद में तो मजबूरी में ही सही, कभी पढ़ने के लिए, कभी नौकरी के लिए, कभी कुछ तो कभी कुछ के लिए शहरे–शहर छिछिआना पड़ा। अफ्रीका–यूरोप तक गया। अनवरत भाग ही रहा हूँ न जाने कब से! .. और पहुँचा कहीं नहीं हूँ।

बस कोरोना में गोड़ तूड़ के बइठना पड़ा। इसको लॉकडाउन कहा गया। लॉकडाउन में बहुत लोगों को गाँव भागते देखा। बहुत लोगों को यह कहते सुना कि – अब गाँवे में रहल ठीक बा।

कभी–कभी मेरा भी मन करता है कि गाँव के दुआर पर एक कोने में खोंप और पलानी हो। खूँटे पर गाय–बछरू हो। खाँटी दूध मिले। गाय के गोबर वाले खाद से फरहरी लगे और ताजा तर–तरकारी मिले। दुआर पर एक–दो पेड़ लगें और प्राणवायु ऑक्सीजन मिले। तो सोचता हूँ कि माई ठीके कहती थी कि– बबुआ हो जनमधरती से ना कटे के, ना छोड़े के, बुरा वक्त में ओही जी लौटे के पड़ेला।

कोरोना काल में जब मानव जीवन संकट में पड़ा तो सबको समझ में आया कि पंच तत्व, जिससे जीवन बना है, देह बना है, उससे जुड़ के रहना कितना जरूरी है। अपनी मिट्टी से जुड़ के रहना, उसमें लोटना, रोज उसको छूना कितना जरूरी है। नीम, बरगद, पीपल के छाँव में रहना कितना जरूरी है। घाम लोढ़ना कितना जरूरी है।
सच कहूँ तो माई की बतिया बार–बार याद आती है और याद आता है मेरा गाँव, मेरा स्टेशन।

यह सिवान, रघुनाथपुर थाना का कौसड़ स्टेशन है, मगर आज भी यहाँ से न कोई ट्रेन गुजरती है, न बस। आज भी यह गाँव है। मेरा गाँव। हालाँकि सुना है कि सरयू (घाघरा) के किनारे गाँव के दक्षिण में जो बाँध है, वह 20 फीट चौड़ी पक्की सड़क में तब्दील हो रही है। इससे विकास की कुछ और गुंजाइश बनेगी। बिजली–बत्ती तो है। पानी भी खरीदकर कुछ लोग पीने लगे हैं। कुछ लोगों के घर में एसी भी लगा है, लेकिन बहुत सारे लोग अभी भी बगइचा में बेना

डोलाते नजर आ रहे हैं।
बहुत सारे लोगों की माली हालत ऐसी है कि मुझे अपना शेर याद आता हैः
कहीं शहर ना बने गाँव अपनो ए भावुक
अंजोर देख के मड़ई बहुत डेराइल बा ...

गाँव में मेरा रहना बहुत कम हुआ है, लेकिन गाँव मेरे भीतर हमेशा रहा है। 1993 में मैंने अपने गाँव की बायोग्राफी लिखी– कौसड़ का दर्पण। उसका सारांश पोस्टर के रूप में तब होली के आस–पास कई गाँवों की दीवालों पर चिपका था। मेरे गाँव में 29 जातियाँ हैं। गाँव की बॉयोग्राफी को मैंने पद्य में भी लिखा था। उसमें जातियों का जिक्र कुछ यूं था–

अहीर, गोंड़, नोनिया,
बनिया, डोम, दुसाध, चमार
भर, भाँट, कमकर, कुर्मी,
बरई और लोहार
ततवा, तेली, तीयर, बीन,
नट, कोइरी, कोंहार
महापात्र, मुस्लिम, मल्लाह,
धोबी और सोनार
नाउ, पंडित, लाला, ठाकुर ...
29 जातियों का ये झुंड
सीधा–शरीफ, हुंडा तो हुंड
कौसड़ के दर्पण में निहार
मन बोल रहा है बार–बार
हे कौसड़ तुमको नमस्कार।

लंबी कविता है, जिसमें कौसड़ के लोगों के जनजीवन के विभिन्न बिंदुओं को छूने का प्रयास किया गया है।

1993 में मैंने जो जनगणना की थी, वह मेरा खुद का शौकिया प्रोजेक्ट था। गाँव को जानना था ठीक से। तीन महीने तक लगा रहा। गर्मी का महीना था। कई बार सिवान भी गया, गाँव से संबंधित कागजात के लिए।

मुझसे 20 साल पहले यह काम मेरे हीं गाँव के एक वैज्ञानिक फूलदेव सहाय ने किया था। उनकी आत्मकथा में एक अध्याय 'मेरा गाँव कौसड़' भी है। हालाँकि उस किताब की या जनगणना की मुझे कोई जानकारी नहीं थी। जब मैंने अपना काम शुरू किया और लोगों से मिलना–जुलना शुरू किया तो हमारे गाँव के गणेश सिंह ने न सिर्फ उस किताब की जानकारी दी, बल्कि वह किताब भी उन्होंने उपलब्ध कराई। गणेश जी भी उस जनगणना में फूलदेव सहाय के सहयोगी थे।

गाँव की चौहद्दी की बात करें तो पूरब में गभिराड़, पश्चिम में बड़ुआ, उत्तर में पंजवार और दक्षिण में घाघरा नदी है। पंजवार ही मुख्य सड़क है, जो सिवान या छपरा, पटना से कनेक्ट करती है। पंजवार से डेढ़–दो किलोमीटर अंदर है गाँव के लोगों का रेसिडेंशियल एरिया। पंजवार रोड से लेकर रेसिडेंशियल एरिया तक खेत है। इन्हीं खेतों के बीच एक खाड़ी भी है, जो दक्षिण में घाघरा नदी से कनेक्ट हो जाती है। खाड़ी का निर्माण खेतों की सिंचाई के लिए किया गया है। इन खेतों के कुछ भूभाग को चँवरा कहा जाता है। खाड़ी उस पार (पूरब दिशा में) के खेतों को डीह पर का खेत कहा जाता है और दक्षिण में घाघरा नदी के किनारे वाले खेतों को दियर/दियारा कहा जाता है। गेहूँ, धान, अरहर, जौ, बाजरा, मक्का, सब्जियाँ और दियर में गन्ना की खेती होती है। मक्का या मकई के बाल को अगोरने के लिए मचान पर रात में सोने या दिन भर गपियाने के बचपन के कई संस्मरण जेहन में हैं। हल और हेंगा की कहानियाँ भी हैं, जिन्हें आज ट्रैक्टर ने रिप्लेस कर दिया है। गायों और भैंसों के लिए साँड़ और भैंसा को "कर छो कर छो" कर के तलाशने के रोचक किस्से भी हैं और बचपन के जिज्ञासु मन में इस बाबत उठने वाले तमाम सवालों के जवाब अपनी बालमण्डली में खोजने और विचित्र जवाबों के ठहाकों से गुलजार यादें भी हैं, जो शहर और मेट्रो के बच्चों के लिए दुर्लभ हैं।

तब खाना बनाने के लिए लगभग सभी घरों में मिट्टी के एकमुँहे और दोमुँहे चूल्हे ही होते थे, जिसमें ईंधन के रूप में रहेठा या चइली लवना के रूप में प्रयोग किया जाता था। अब तो मोदी जी ने घर–घर गैस का चूल्हा

पहुँचा दिया। झाड़ा फिरने, मैदान जाने या शौच के लिए अब शायद ही कोई घर से दो किलोमीटर दूर खेतों में जाता हो। घर–घर शौचालय है। अब किसी माँ, बहन, भाभी को शौच के लिए पेट दबाकर अंधेरा होने का इंतजार नहीं करना पड़ता है।

मेरे भी गाँव में कई अंग्रेजी मीडियम स्कूल खुल गए हैं। तब पंजवार से कौसड़ आने वाली सड़क के अंतिम छोर, टी पॉइंट पर एक सरकारी प्राइमरी स्कूल था, जो आज भी है। बस, बिल्डिंग थोड़ा बड़ा और नंबर ऑफ रूम्स बढ़ गए हैं। मुझे मालूम नहीं कि अब के मास्टर जी हमारे समय के पंडीजी की तरह रोज पेड़ के नीचे समूह में खड़ा करके पनरह का पनरह, पनरह दूनी तीस, तिया पैतालीस, चउके साठ करते हैं कि नहीं। वह गाँव का ही गिनती–पहाड़ा का बेस था कि मैं रेनुकूट, सोनभद्र (तब मीरजापुर) उत्तर प्रदेश में चौथी कक्षा में एडमिशन लिया, तब से हाई स्कूल तक गणित में 100 परसेंट अंक मिलते रहे। मुझे अभी भी याद है कि उसी स्कूलिया पर हर मंगर और शनिचर के साँझ को बाजार लगता था। तब, हम अपने संघतिया लोग के साथ घुघुनी और जिलेबी खाने जाते थे।

गाँव में चिक्का, कबड्डी, गुल्ली–डंडा का खेल अब ना के बराबर रह गया है। (बल्कि वह दुर्लभ खेल गाँव से पार्लियामेंट में सिफ्ट हो गया है।) बच्चों में मोबाइल गेम यहाँ भी हावी है।

गाँवों में अब डायन ना के बराबर पाई जाती हैं। पहले बात–बात पर डायन अस्तित्व में आती थी। किसी को बुखार हुआ नहीं कि घर के लोग उचरना शुरू करते थे, डायन कइले होई। फिर डॉक्टर से ज्यादा ओझा का महत्त्व था और दवा से ज्यादा करियवा डाँरा का। हर बच्चे के कमर में एक काला धागा होता था। किसी के यहाँ चोरी होने पर पुलिस के पास लोग बाद में जाते थे पहले गाँव के खुशी भगत के पास पहुँचते थे। खुशी भगत का बाँध के किनारे देवस्थान था। वहीं वह भाखते थे और बता देते थे कि किसका पाड़ा कौन चोरा कर ले गया है। केकरा हाड़े कब हरदी लागी। सब सवालों के जबाब थे खुशी भगत। उन पर परी आती थी। वह बीड़ी पीते थे। परी के आते ही बीड़ी फेंक देते थे और समाधान बताने लगते थे। अब खुशी भगत नहीं रहे।

गाँव भी पहले वाला नहीं रहा। मुझे याद है, तब जाड़े के दिन में दियारा जाने पर लोग पूछ–पूछ के ऊख का रस पिलाते थे। महिया खिलाते थे। अब एक दूसरे को पूछने और मिलने–जुलने की रवायत कम हो गई है। बरगद का पेड़ भी अब पहले जैसी छाँव नहीं देता। इंफ्रास्ट्रक्चर तो बढ़ रहा है, पर दिलों का कनेक्शन कमजोर हो रहा है। गाँव तो गाँव, पड़ोसी गाँव भी ईर्ष्यालु और आत्ममुग्ध हो गया है। आपके काम को मान नहीं देगा। इससे उसके अस्तित्व को खतरा है। वह हजार, दो हजार, छह हजार किलोमीटर दूर कोई आका खोज लेगा। उसको पूजेगा और आपके बड़े काम को नकार देगा।

मैं अपनी मातृभाषा भोजपुरी के लिए देश–विदेश घूमता रहा। हाल ही में मॉरीशस अंतरराष्ट्रीय महोत्सव में गया था। दस साल पहले भी वहाँ गया था। तब भारत सरकार के आईसीसीआर की ओर से गया था। अबकी बार मॉरीशस सरकार ने अपने खर्च पर बुलाया था।

मॉरीशस सरकार द्वारा भारत से बतौर रिसोर्स पर्सन और पैनलिस्ट बुलाया गया था मुझे। वहाँ भोजपुरी सिनेमा के सफर और संभावना पर ना सिर्फ हमने अपनी बात रखी, वरन इस विषय पर अपनी बनाई डॉक्यूमेंट्री भी दिखाई। भोजपुरी साहित्य और सिनेमा पर ऐतिहासिक काम के लिए फेमिना और फिल्मफेयर की ओर से मिले सम्मान के बाद सिनेमा पर मेरे द्वारा किए गए शोध को विशेष महत्त्व दिया जाने लगा है और यह चर्चा में है।

वर्ष 2014 में भोजपुरी भाषा और साहित्य का प्रचार–प्रसार विश्वस्तर पर करने के लिए मुझे मॉरीशस के पूर्व राष्ट्रपति और पूर्व प्रधानमंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी के हाथों 'अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी गौरव सम्मान,

मॉरीशस 2014' से सम्मानित किया गया और मॉरीशस के राष्ट्रपति कैलाश पुरयाग ने मेरे भोजपुरी गजल–संग्रह तस्वीर जिंदगी के का विमोचन किया। ये सारी खबरें सिवान के अखबारों में भी छपीं। सिवान का बेटा हूँ तो गाँव–जवार के बहुत लोग खुश हुए, कुछ जरनियाह नकछेदियों को छोड़कर। नकछेदिया सब तो जर के राख हो गए। वे दूर गाँव से, दूर देश से जीजा–फूफा बोलाकर प्रोग्राम करते हैं, लेकिन गाँव–जवार के भाई–भवधी को छोड़ देते हैं।

साल 2023 में कौसड़ गाँव के 103 वर्षीय लोक गायक जंग बहादुर सिंह को भोजपुरी लोकगायकी के क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। गोपालगंज के भोरे के अमही मिश्र में जय भोजपुरी–जय भोजपुरिया द्वारा आयोजित साहित्यिक–सांस्कृतिक महोत्सव में सम्मान दिया गया। सम्मान प्रख्यात लोक गायक मुन्ना सिंह व्यास, भरत शर्मा व्यास और संस्था के अध्यक्ष सतीश त्रिपाठी द्वारा संयुक्त रूप से दिया गया। इस अवसर पर भोजपुरी के लोकप्रिय गायक मदन राय, गोपाल राय, विष्णु ओझा, उदय नारायण सिंह, राकेश श्रीवास्तव, कमलेश हरिपुरी और संजोली पाण्डेय समेत कई कलाकार और हजारों की संख्या में श्रोतागण मौजूद थे। ऐसे भी जंग बहादुर सिंह का इंटरव्यू, उनका गाना बड़े–बड़े अखबार और टीवी चौनल के साइट पर मौजूद है– आज तक, एनडीटीवी, जीटीवी, न्यूज 18, बिहार तक, टाइम्स नाउ, सन्मार्ग, डीएनए, हिंदुस्तान, जागरण, भास्कर .. अनेक जगह। लेकिन भोजपुरी की दुकान चलाने वाले नकछेदिये को यह सब कभी नहीं दिखा। वह तो इतने जलनखोर हैं कि चेला–चूली रखकर

मुझे ट्रोल करते रहे, हालाँकि उसी गाँव के कुछ कर्मठ और इज्जतदार लोगों ने इन सबके विरोध में दिल्ली में मेरा भव्य स्वागत–सम्मान किया, जब फेमिना और फिल्मफेयर से सम्मानित होके हम दिल्ली लौटे तो।

सच कहूँ तो गाँव, जहाँ भारत की आत्मा बसती है, वहाँ की जड़ों में सियासी घुन लग गए हैं। जनकवि कैलाश गौतम की एक कविता बड़ी लोकप्रिय है, गाँव गया था, गाँव से भागा ... स्थिति उससे बदतर होती जा रही है।

क्रिएटिविटी के लिए जरूरी है कि गाँव और चौहद्दी के गांवों में सौहार्द, सहयोग और एक–दूसरे को आगे बढ़ाने की प्रवृति जागृत हो। सहयोग ही गाँव की मूल आत्मा थी और इसी के बल पर बड़े से बड़े अनुष्ठान होते थे।

इसी सहयोग और सौहार्द को पुनर्स्थापित करने की जरूरत है। सबके आँगन में सूरज स्थापित करने की कोशिश हो।

दूसरी जरुरी बात, गाँवों के प्रति नजरिया बदले। गाँवों में महत्त्वपूर्ण काम करने वाले भी कुछ लोगों की नजर में बुरबक या लड़बक होते हैं और शहर में गोबर पाथने वाले भी होशियार। यह घटिया सोच बदलनी चाहिए। वैसे भी अब गाँवों की ओर ही लौटना होगा। शहर की आबोहवा जहरीली हो गई है। हम मुखनली और श्वासनली दोनों से जहर ले रहे हैं। इसलिए जीवन को बचाना है तो गाँवों की ओर लौटना ही होगा, पर जीवन में जीवन रहे, इसके लिए प्रेम और सौहार्द को भी स्थापित करना होगा।

काश, मेरा यह शेर झूठा साबित हो जाये–

लोर पोंछत बा केहू कहाँ
गाँव अपनो शहर हो गइल।

❐

होली पर भोली महिलाएं रहें सावधान

✍ राकेश सिंह 'सोनू'

1) अगर आपके पति होली के दिन अपनी साली को घर बुलाने की जिद करें तो आप भी समस्या टालने के लिए अपने कुंवारे देवर को बुलाने की शर्त रखें।

2) अगर आपकी कुंवारी सहेली होली की शाम मिलने आ जाए तो आप कुछ ज्यादा सतर्क हो जाएं। हो सकता है आपके पति उसे धोखे से भांग खिला दें और उसके लड़खड़ाने बहकने पर उसे घर तक लिफ्ट देने की अपनी मंशा में कामयाब भी हो जाएं।

3) अगर आपके किराएदार की खूबसूरत जवान बीवी होली की शाम आपके अधेड़ पति के पांव पर गुलाल रखने की बजाए उनके गालों पर गुलाल लगा दे और आपके पति खुशी से बावले हो जाएं तो आप समझ लें कि अगले महीने का किराया समय पर नहीं मिलने वाला।

4) अगर आप किराएदार हैं और आपकी मकान मालकिन आपके और अपने पति की मौजूदगी में भी आज के दिन आपके पति को जी भर के रंग डाले तो आप समझ लेने की बहुत ही जल्द वह मकान आपको खाली करना पड़ेगा।

5) अगर आपके जीजा आपकी दीदी को सिर्फ नाम मात्र का रंग लगाएं और आपको सर से पांव तक रंग डालें तो फिर आप समझ लें भविष्य में आपकी दीदी रोएगी और उसकी अगली होली फीकी जानेवाली है।

6) अगर आज के दिन आपके दूर के चाचा या फूफा अचानक आपके घर आ जाएं और आपकी हर बात में तारीफ करें तो आप समझ लें कि उनकी नजर में अब आप बच्ची नहीं रहीं। ऐसे में बदरंग होली से बचने के लिए उनसे अजनबियों जैसा व्यवहार करें।

7) अगर आपकी सहेली होली की शाम आपको गुलाल लगाने आए और आपके भैया के माथे पर टीका लगाने या पैर पर गुलाल रखने की बजाय उनके गाल रंग जाए तो आपको गंभीरता से सोचना चाहिए। अगर आप उसे अपनी भाभी के रूप में देखना चाहती हैं तब तो उसकी मदद कीजिए, अगर भाभी नहीं बनना चाहती तो किसी बहाने रक्षाबंधन के दिन उससे भैया को राखी बंधवा दें।

8) अगर होली की शाम आपके पति काम करनेवाली बाई के बहुत नागा करने पर भी बड़े प्यार से पेश आएं, तो समझ लें घर की टेंशन बढ़ने वाली है।

9) होली में आपके मायके जाने की खबर सुनकर जब आपका पति खुशी से बावला हो जाए तो समझ जाएं कि उनकी होली कैसी बीतने वाली है!

10) होली के दिन आपका पति जब आपकी दुश्मन पड़ोसन के बच्चों को प्यार से पुकारे तो समझ जाएं आपकी पड़ोसन जल्द ही आपके पति के करीब आनेवाली है। ❐

90 के दशक के गानों को सुनते हैं

मुंबई ब्यूरो, आज भी लोग 90 के दशक के गानों को सुनते हैं। उसी दौर के गानों और कहानियों की याद दिलाता म्यूजिक वीडियो ''हमारा कॉलेज में जाना'' रेड रिबन म्यूजिक कंपनी द्वारा रिलीज होने के बाद काफी लोकप्रिय हो रहा है। इस गाने की सफलता का जश्न मुंबई के जुहू स्थित हयात सेंट्रिक होटल में मनाया गया, जहां पद्मश्री अनूप जलोटा मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद थे।

मीती बग्गा म्यूजिक वीडियो की गीतकार और निर्माता हैं, जबकि सुजाता त्रिवेदी गायिका और संगीतकार हैं। विवेक प्रकाश वीडियो डायरेक्टर हैं और वीडियो में द्रक्षा शर्मा और अर्नव शर्मा भी हैं।

मीती बग्गा एक मशहूर फैशन डिजाइनर होने के साथ–साथ अपनी लेखनी के जरिए भी जादू बिखेर रही हैं। बतौर गीतकार उन्होंने पहले भी गाने लिखे हैं, लेकिन इस गाने में एक अलग ही रोमांस और खुशबू है।

इस कार्यक्रम में म्यूजिक वीडियो की मेकिंग भी दिखाई गई। एल्बम के बारे में एक क्विज भी दिया गया, जो काफी दिलचस्प रहा। संगीत वीडियो को स्क्रीन पर दो बार दिखाया गया, जिसे सभी ने सराहा और दर्शक पवित्र प्रेम और जादुई संगीत में खो गए। रेड रिबन के एमडी लालित्य मुंशा ने अनूप जलोटा को गुलदस्ता देकर सम्मानित किया, जबकि इस अवसर पर अनूप जलोटा ने मीती बग्गा सहित पूरी टीम को गुलदस्ता देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर बिग बॉस 12 फेम गायक दीपक ठाकुर, रोली प्रकाश की भी विशेष उपस्थिति रही। निर्माता और गीतकार मीती बग्गा ने मंच पर कविता पाठ कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। संगीतकार गायिका सुजाता त्रिवेदी ने जब इस गीत को अपनी मधुर आवाज में गाया तो सभी भाव विभोर हो गए। प्रेरणा गुप्ता ने अपनी एंकरिंग से कार्यक्रम को और भी रोचक बना दिया। बतौर संगीत निर्देशक और गायक खुद को साबित कर चुके विवेक प्रकाश ने इस गीत के वीडियो को बहुत ही खूबसूरती और परिपक्वता से निर्देशित किया है और गीत में छिपे रोमांस को बहुत ही सहजता और खूबसूरती से पेश किया है। कोरियोग्राफर तान्या रविंद्रन ने अपनी बेहतरीन कोरियोग्राफी से इस गीत को और भी संवारा है। रेड रिबन के प्रबंध निदेशक लालित्य मुंशा कहते हैं, रेड रिबन में, हमारा हमेशा से यह प्रयास रहा है कि बेहतरीन संगीत को रिलीज किया जाए और उसका प्रचार किया जाए। मुझे पूरा विश्वास है कि यह म्यूजिक वीडियो हमारा कॉलेज में जाना और भी बड़ी सफलता हासिल करेगा। इसे अभी हमारे रेड रिबन म्यूजिक यूट्यूब चौनल पर देखें और शेयर करें।

हमारा कॉलेज में जाना रेड रिबन एंटरटेनमेंट के आधिकारिक चैनल पर रिलीज किया गया है और इसे संगीत प्रेमियों से शानदार प्रतिक्रिया मिल रही है। यह गीत श्रोताओं और दर्शकों को 1990 के दशक में ले जाता है। वीडियो को खूबसूरती से शूट किया गया है। द्रक्षा शर्मा बहुत प्यारी लग रही हैं और म्यूजिक वीडियो भी बहुत प्यारा लग रहा है।

गेस्ट ऑफ ऑनर अनूप जलोटा ने गीत की सफल रिलीज के जश्न के अवसर पर एल्बम से जुड़ी पूरी टीम को बधाई और शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि निर्माता मीती बग्गा ने बहुत ही खूबसूरत बोल लिखे हैं जो दिल को छू जाते हैं। ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने कॉलेज के समय के अनुभवों को इस गीत में पेश किया है। सुजाता त्रिवेदी ने इसे बेहतरीन तरीके से कंपोज किया है और उतनी ही शिद्दत से गाया भी है। द्रक्षा और अर्नव शर्मा की केमिस्ट्री कमाल की लग रही है। यह गाना और अधिक लोकप्रियता हासिल करेगा। ❐

अदा शर्मा अवाक रह गई क्योंकि विदेशी लड़कियां उन्हें आश्चर्यचकित करने के लिए साड़ी पहनती हैं!

मुंबई ब्यूरो, अदा शर्मा की जबरदस्त फैन फॉलोइंग है। न केवल पर्दे पर उनके लुभावने प्रदर्शन के लिए बल्कि उनके वास्तविक जीवन के व्यक्तित्व के लिए भी। अदा की अभिनय प्रतिभा को उनकी पहली फिल्म 1920 से ही सराहा गया था, लेकिन यह केरल की कहानी थी जिसने उन्हें एक घरेलू नाम बना दिया। भारतीय सिनेमा में अब तक की सबसे अधिक कमाई करने वाली महिला मुख्य फिल्म होने के नाते द केरल स्टोरी ने अदा के स्टारडम को उस स्तर तक पहुंचा दिया जिसके लिए कई अभिनेत्रियां तरसती हैं। अदा हाल ही में एक कार्यक्रम में थीं और उनका स्वागत करने के लिए साड़ी पहने 20 विदेशी लड़कियां थीं। उन्हें दिया गया लुक द केरल स्टोरी से अदा का लुक था जिसे उन्होंने इंस्टाग्राम पर साझा किया था। अदा ने अपने सामान्य स्वभाव के कारण लड़कियों की सुंदरता की सराहना करते हुए उन्हें शानदार बताया और कहा कि अगर उन्हें पता होता कि वे साड़ी पहनने जा रही हैं तो वह भी साड़ी पहनती। अदा शर्मा अगली बार रीता सान्याल सीजन 2 और एक अंतरराष्ट्रीय एक्शन फिल्म में एक सुपरहीरो के रूप में दिखाई देंगी। उनके पास दो तेलुगु परियोजनाएं भी हैं। अदा का कहना है कि वह अलग–अलग किरदारों और भूमिकाओं को करने की कोशिश करेंगी, जिनमें उन्हें पहले कभी नहीं देखा गया है। 1920 से केरल की कहानी तक हम यह देखने के लिए इंतजार नहीं कर सकते कि उन्होंने आगे क्या किया है! ❐

समाचार वाचकों की गति कितनी हो ?

✍ सुरेंद्र किशोर
पूर्व राजनीति संपादक, दै. हिन्दुस्तान, पटना

जी–भारत चैनल पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंकर जीनिया खबरें पढ़ती है। उसके पढ़ने की गति पर गौर कीजिए।

वह सामान्य गति है। वह ऐसी गति है जिसके कारण सारी खबरों को श्रोता–दर्शक आसानी से जान–समझ लेते हैं।

दूसरी ओर, कुछ चैनलों के समाचार वाचक बुलेट ट्रेन की गति जैसी गति में खबरें पढ़ते हैं। यानी, सीमित समय में 100 खबरें !

जल्दी –जल्दी खबरें उगलते जाने का नतीजा यह होता है कि समाचार वाचक या वाचिका का एक शब्द दूसरे शब्द पर और एक वाक्य दूसरे वाक्य पर सवारी करता रहता है। इस तरह सौ खबरों में से कम से कम 25 खबरों के ओर–छोर यानी कथ्य–तथ्य का पता ही नहीं चलता।

अरे भाई,100 खबरों की जगह 75 खबरें ही उगलो ताकि जो उगल रहे हो,वह श्रोताओं के गले तो उतर जाए ! अभी तो सिर के ऊपर से चला जाता है।

दरअसल निजी टी.वी.चैनल वाले अपने कार्यक्रमों के बारे में सर्वेक्षण शायद नहीं करवाते हैं।

कम से कम समाचार वाचकों की स्पीड के बारे में तो सर्वेक्षण करवा लो, यदि मेरी बात पर विश्वास न हो तो।

मैं तो बुलेट ट्रेन जैसी गति से समाचार वाचन करनेवाले चैनलों पर खबरों के लिए जाता ही नहीं।

संसद की तरह निरंतर हंगामा करने वाले अधिकतर टी.वी. डिबेटरों के कार्यक्रमों को आप नजरअंदाज कर सकते हैं,किंतु खबरें तो देखनी ही पड़ेंगी।

ध्यान रहे कि डिबेट के नाम पर ''कुत्ता भुकाओ कार्यक्रम'' चलाने वाले चैनलों की ओर मैं नहीं झांकता। ❐

सांसारिक सुख के अधिष्ठाता शुक्र

✍ उमेश उपाध्याय
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ
संपर्कः 9709378488

सांसारिक सुख के अधिष्ठाता शुक्र हैं। शुक्र का सीधा संबंध भोग विलास, सौंदर्य, कला, गीत संगीत, प्रेम एवं जीवन के अन्य सुखों से है। वृष और तुला इनकी दो राशियां हैं जिसमें एक स्थिर एवं एक चर राशि है, इसीलिए शुक्र में स्थिरता एवं गतिशीलता दोनों गुण पाए जाते हैं। शुक्र दक्षिण पूर्व का स्वामी, स्त्री जाति, श्याम गौरवर्ण एवं कार्य कुशल हैं। आकृति में अष्टभुजाकार, कोमल एवं वात कफ प्रकृति वाले हैं। शुक्र को भी कांतिवान एवं आकर्षक ग्रह कहा गया है। यह एक चमकीला ग्रह है। पुराणों में इन्हें दैत्य गुरु कहा गया है। शुक्र को गान विद्या, काव्य, पुष्प, नेत्र, वाहन, शय्या, स्त्री, कविता आदि का कारक ग्रह माना गया है।

दिन में जन्म होने पर इससे माता का भी विचार किया जाता है। शुक्र ग्रह व्यक्ति को कामुकता, भोग विलास व माया–मोह के भौतिक सुख साधनों की ओर आकर्षित करता है। बुध और शनि ग्रह उनके मित्र हैं। शुक्रवार इनका अपना शुभ वार है।

शुक्र से बननेवाले कुछ महत्वपूर्ण योगः–

(1) जब शुक्र उच्च का होकर या स्वग्रही होकर लग्न या चंद्र लग्न से केंद्र में स्थित हो तो मालव्य योग होता है। इस योग में व्यक्ति विद्वान, बलवान, गुणवान, परिवार प्रिय, संतान से सुखी, शास्त्रज्ञ, विख्यात एवं कई वाहनों वाला होता है।

(2) जब लग्न चर राशि का हो तथा शुक्र और गुरु केंद्रस्थ हो तो अंशावतार योग होता है। इस योग में व्यक्ति कीर्तिवान, विद्वान एवं सभी सुख सुविधाओं वाला होता है।

शुक्र का भाव के अनुसार फल

1) लग्न में शुक्र हो तो जातक दीर्घायु, ऐश्वर्यवान, सुखी, मधुर भाषी, दीर्घायु, विद्वान, भोगी, विलासी एवं राज प्रिय होता है।

2) द्वितीय भाव में शुक्र हो तो व्यक्ति धनवान, मिष्ठान भोगी , यशस्वी, लोकप्रिय ,सुखी ,कुटुंब युक्त, दीर्घ जीवी, साहसी एवं भाग्यवान होता है।

3) तृतीय भाव में शुक्र हो तो व्यक्ति कृपण, सुखी, धनी , आलसी, पराक्रमी ,विद्वान एवं पर्यटन शील होता है।

4) चतुर्थ भावस्थ शुक्र व्यक्ति को सुंदर, बलवान, परोपकारी, आस्तिक, सुखी ,व्यवहार दक्ष , विलासी, भाग्यवान , पुत्रवान एवं दीर्घायु होता है।

5) शुक्र अगर पांचवे भाव में हो तो व्यक्ति को सुखी, भोगी, सद्गुणी, न्यायवान, आस्तिक, दानी, उदार, विद्वान, प्रतिभाशाली एवं यशस्वी बनाता है।

6) छठे भाव में शुक्र हो तो व्यक्ति स्त्री सुखहीन, बहु मित्र, वैभवहीन, दुखी, स्त्री प्रिय, शत्रु नाशक एवं मितव्ययी होता है।

7) शुक्र यदि सातवें भाव में हो तो स्त्री से सुखी, उदार , लोकप्रिय , दानी, चिंतित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधु प्रेमी, कामी ,चंचल ,विलासी एवं भाग्यवान होता है।

8) अष्टम भाव का शुक्र व्यक्ति को सभी भौतिक सुविधाएं प्रदान करता है, प्रवासी बनाता है, परिवार, सुख शांति एवं संतोष देता है।

9) नवें भाव में शुक्र हो तो व्यक्ति आस्तिक, गुणी, गृह सुखी, प्रेमी, दयालु, पवित्र, तीर्थ यात्राओं वाला होता है। समाज में लोकप्रिय होता है एवं आदर्श स्थापित करता है। धनी एवं संतुष्ट होता है।

10) दसवें भाव का शुक्र व्यक्ति को विलासी ऐश्वर्यवान, न्यायवान, विजयी, लोभी धार्मिक, भाग्यवान, गुणवान एवं दयालु बनाता है।

11) एकादश भाव में शुक्र हो तो व्यक्ति को लक्ष्मीवान, धनवान, गुणवान, पुत्रवान, सुखी, परोपकारी बनाता है।

12) 12 वें भाव का शुक्र व्यक्ति को न्यायशील , आलसी, धनवान, मितव्ययी, शत्रु नाशक बनाता है।

राशि अनुसार शुक्र का फलः

मेष राशि का शुक्र हो तो व्यक्ति को विश्वास हीन, झगड़ालु, कामुक एवं स्वार्थी बनाता है।

वृष राशि का शुक्र व्यक्ति को सुंदर, ऐश्वर्यवान, दानी, सात्विक, सदाचारी, परोपकारी,अनेक शास्त्रज्ञ बनाता है।

मिथुन राशि का शुक्र व्यक्ति को चित्रकला निपुण, साहित्यिक, कवि, साहित्य प्रेमी, सज्जन एवं लोक हितैषी बनाता है।

शुक्र कर्क राशि में हो तो व्यक्ति धार्मिक,ज्ञाता, सुंदर ,सुख और धन का इच्छुक एवं नीतिज्ञ होता है। सिंह राशि का शुक्र हो तो व्यक्ति को अल्प सुखी चिंतातुर व कामुक बनाता है।

कन्या राशि शुक्र की नीच राशि है। इस राशि में शुक्र के रहने से व्यक्ति सभा पंडित, सुखी , भोगी , अति कामी ,रोगी एवं सट्टे द्वारा धन नाशक होता है।

तुला राशि शुक्र की अपनी राशि है। इस राशि में शुक्र के होने से व्यक्ति प्रवासी ,यशस्वी ,कार्य दक्ष, कलानिपुण एवं विलासी होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो व्यक्ति क्रोधी, झगड़ालू ,नास्तिक होता है। आकस्मिक धन भी प्राप्त होता है।

धनु राशि का शुक्र व्यक्ति को स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला , विद्वान ,सुंदर ,लोकमान्य, राज्य मान्य एवं सुखी होता है।

मकर राशि का शुक्र व्यक्ति को बलहीन, सुखहीन, नीतिहीन बनाता है।

कुंभ राशिफल शुक्र व्यक्ति को चिंता तुर एवं कामुक बनाता है किंतु वह प्रीति, प्यार व परोपकार की भावना में वृद्धि करता है।

मीन राशि शुक्र की उच्च राशि है। इस राशि में शुक्र के रहने से व्यक्ति विद्वान , कार्य कुशल ,धनी एवं श्रेष्ठ होता है। सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। जातक देखने में सुंदर एवं धनवान होता है। उसे राज्य से सम्मान मिलता है।

उपर्युक्त फल सामान्य रूप से उद्धृत किया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य ग्रहों के दृष्टि एवं उपस्थिति का भी फल पर प्रभाव होता है।

शुक्र के अशुभ फल होने पर उनकी शांति हेतु उपाय–

(1) गाय को रोटी खिलाएं,
(2) मां लक्ष्मी की पूजा करें,
(3) घर में सुगंधित चीजों का उपयोग करें,
(4) शुद्ध घी, कपूर और दही पूजा स्थलों में दें।

❐

अतीत, वर्तमान व भविष्य : सपनों का रहस्य

✍ डॉ. कुमकुम वेदसेन
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई
संपर्कः 8355897893
ईमेल : k.vedasen@gmail.com

शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिए नींद एक औषधि है, नींद की अवस्था में हम स्वप्न भी देखते हैं, स्वप्न देखने के बाद ऐसा महसूस होता है हमने ऐसा स्वप्न क्यों देखा...! सपने देखने का कारण क्या है इस विषय पर हम थोड़ा विश्लेषण यहां पर कर रहे हैं.....

हर इंसान की अपनी एक दुनिया होती है और उसी दुनिया में तरह–तरह की ख्वाहिशें हैं। विचार, इच्छाएं, कुछ तो पूरी हो जाती हैं और कुछ पूरी नहीं हो पातीं। जो अतिरिक्त रहती हैं किसी न किसी कारणवश, कभी व्यक्तिगत कारण होता है कभी आर्थिक कारण होता है। कभी सामाजिक कारण होता है कभी मर्यादा का बंधन होता है तो किसी न किसी कारणवश हर इच्छाएं पूर्ण नहीं हो पातीं और जब पूर्ण नहीं हो पाती हैं तो इंसान उन इच्छाओं को भूलने की कोशिश करता है। यह भूलने की प्रक्रिया भी दो प्रकार से होती है। कुछ तो हम स्वतः भूल जाते हैं और कुछ इच्छाओं, विचारों को हम जबरन भुलाते हैं। दोनों विचार जो स्वतः भूल जाते हैं और जिन्हें जबरदस्ती हम भुलाने की कोशिश करते हैं सभी मन के अचेतन भाग में चले जाते हैं।

अब यहां पर यह स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि मन की तीन अवस्थाएं होती हैं– चेतन ,अवचेतन और अचेतन। यह तीनों अवस्थाएं हमारे व्यवहार को नियंत्रित निर्देशित और विश्लेषित करती हैं। इन्हीं के आधार पर यह स्पष्ट करना चाहूंगी, वह इच्छाएं जो बहुत ज्यादा प्रबल थीं और निकट भविष्य में पूर्ण होने की कोई उम्मीदें नहीं थी। उन्हें हम जबरदस्ती भुला देने की कोशिश करते हैं और वह अचेतन मन में चली जाती हैं। हमारा चेतन मन जो वर्तमान से संबंध रखता है और अवचेतन भी करीब करीब चेतन का ही दूसरा भाग है जिन्हें हम अपनी मर्जी से वातावरण में प्रस्तुत कर सकते हैं, जैसे किसी बात को याद करना। तुरंत याद आ गया तो यह अवचेतन का एक हिस्सा है लेकिन अचेतन ऐसा है जिसमें कि हम कोशिश करके भी वर्तमान में नहीं ला सकते हैं, फलस्वरुप अचेतन में जो दबी हुई अतिरिक्त इच्छाएं होती हैं वह कभी स्वप्न के माध्यम से कभी हमारे जीवन की गलतियों के माध्यम से, गलत शब्दों के माध्यम से बाहर आ जाती हैं। स्वप्न देखते हैं तो देखने की अवस्था क्या है इसका स्पष्टीकरण किया जाए तो बहुत हद तक यह बात समझ में आ जाती है कि हमारी कौन सी इच्छाएं जो अतिरिक्त थी वह अपना रूप बदल करके चेतन में आने की कोशिश कर रही हैं। स्वप्न कभी भी स्पष्ट नहीं होते हैं वह हमेशा अस्पष्ट रहते हैं। उन्हें स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिक आधार पर अतीत की घटनाओं को जानना पड़ता है। कुछ प्रतीकात्मक शब्दों के आधार पर उसका विश्लेषण किया जाता है जिससे कि वह अतिरिक्त दबी हुई इच्छाएं धीरे–धीरे स्पष्ट होने लगती हैं।

कई बार एक ही स्वप्न बार–बार नींद में आता रहता है और इंसान बार–बार उन सपनों को देखकर परेशान होता है, क्योंकि प्रायः सोच हमारी नकारात्मकता की ओर जाती है कि कुछ न कुछ ऐसी घटना होने की संभावना है जिसके लिए हमें एक अग्रिम सूचना मिल रही है। मगर यह कोई आवश्यक नहीं है क्योंकि हमारी जो दबी इच्छाएं हैं वह जब बाहर आती हैं, अपना रूप बदलकर आती हैं।

स्वप्न के माध्यम से भविष्य की भी एक सूचना मिलती रहती है। स्वप्न हमारे अतीत को भी दर्शाता है। पुराने जमाने में या प्राचीन समय में स्वप्न की जो भी व्याख्या की गई है वह बहुत ही स्पष्ट है। राजा हरिश्चंद्र ने स्वप्न में अपने सारे राज पाठ को दान कर दिया था, फलस्वरुप जागृत अवस्था में उन्होंने स्वप्न की इस घटना का पालन किया और चंद मिनट में ही वे राजा से रंक बन गए। दान के बाद दक्षिणा देने की जो परंपरा है उसका पालन भी उन्होंने किया था, पर जागृत अवस्था में दक्षिणा के लिए उन्हें अपनी पत्नी और पुत्र का सौदा करना पड़ा तभी वह दक्षिणा पूरी कर पाए लेकिन वह उनके जीवन की एक संघर्षपूर्ण कहानी थी जिसकी परीक्षा प्रभु ने ली थी। और इस परीक्षा में वह सफल हो गए और फिर उन्होंने राजा हरिश्चंद्र के नाम से अपनी प्रसिद्धि पाई।

इस प्रकार कई प्रकार के उदाहरण हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि स्वप्न बेतुका नहीं होता है निरर्थक नहीं होता है, बल्कि वह किसी न किसी प्रकार के भविष्य का संकेत करता है। वर्तमान से भी अवगत कराता है, सावधान भी करता है। बहुत बार तो समस्या का समाधान भी कर देता है तो जब भी नींद में आपको ऐसा महसूस हो कि मैं स्वप्न देख रहा हूं और वह स्वप्न नींद से जागने के बाद अगर सही रूप में याद है तो उसका विश्लेषण बहुत आसान हो जाता है।

इसी प्रकार के कई स्वप्न विश्लेषण की कहानी भी है, कथाएं भी हैं और सच्चाई से सम्बंध रखते हैं, इसलिए कभी भी स्वप्न को निरर्थक बेतुका नहीं समझें, वह हमेशा सार्थक है और किसी न किसी प्रकार के जीवन का संकेत देता रहता है।

अब अगले अंक में स्वप्न पर विश्लेषण किया जाएगा..। ❐

12वीं के बाद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इंजीनियर कैसे बनें ?

✍ विजय गर्ग
शैक्षिक स्तंभकार, मलोट, पंजाब

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक तेजी से विकसित होनेवाला क्षेत्र है जिसमें विभिन्न उद्योगों को बदलने और हमारे रोजमर्रा के जीवन को बेहतर बनाने की असीमित क्षमता है। यदि आप ऐसे व्यक्ति हैं जो प्रौद्योगिकियों और समस्या– समाधान से आकर्षित हैं, तो एआई इंजीनियर के रूप में करियर शुरू करना एक रोमांचक और फायदेमंद विकल्प हो सकता है।

12वीं के बाद एआई इंजीनियर कैसे बनें?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है? एआई के जनक जॉन एमसी कैर्थी के अनुसार, बुद्धिमान मशीनें, विशेष रूप से बुद्धिमान कंप्यूटर प्रोग्राम बनाने का विज्ञान और इंजीनियरिंग। एआई क्या है? आइए मैं इसे सरल शब्दों में समझाता हूं। AI शब्द दो शब्दों 'Artificial (A) + Intelligence (I)' से मिलकर बना है। आर्टिफिशियल शब्द का अर्थ मानव निर्मित है और इंटेलिजेंस का अर्थ सोचने की शक्ति है, और जब हम एआई को जोड़ते हैं तो इसका अर्थ मानव निर्मित सोच शक्ति होता है। क्या AI का अर्थ अब स्पष्ट है? यदि नहीं, तो आइए आगे समझते हैं। यह कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जिसमें हम बुद्धिमान मशीनें या सिस्टम बना सकते हैं जो इंसानों की तरह व्यवहार करते हैं, इंसानों की तरह सोचते हैं और निर्णय लेते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटर सिस्टम की मानव व्यवहार की नकल करने की क्षमता को संदर्भित करता है। एआई क्षमताओं वाली मशीनें

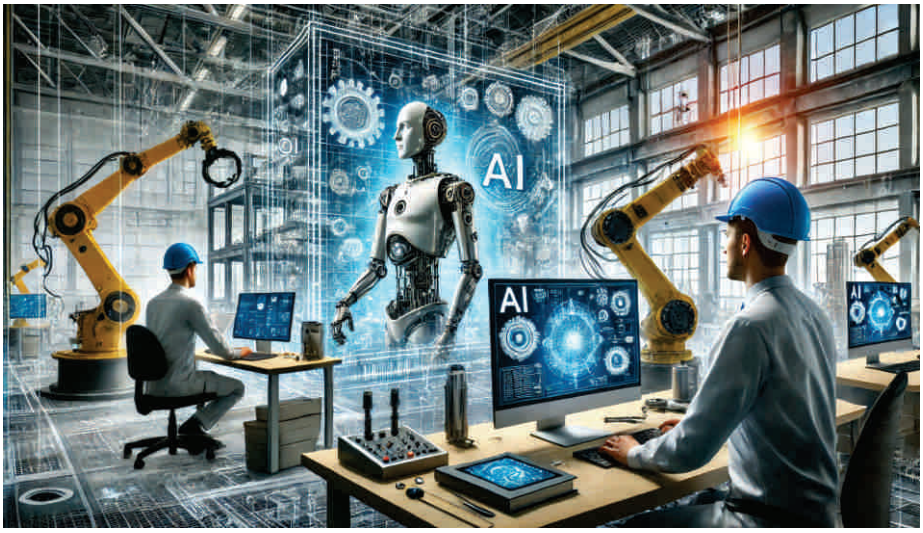

पिछले डेटा और कार्यों से सीख सकती हैं, सुधार कर सकती हैं और मानव जैसे कार्य कर सकती हैं। हम आशा करते हैं कि अब तक आपको यह स्पष्ट समझ आ गया होगा कि एआई क्या है और यह कैसे कार्य करता है, आइए अधिक जानकारी प्राप्त करें।

एआई के प्रकार एआई **के दो मुख्य प्रकार हैं**– नैरो एआई और जनरल एआईए नैरो एआई, जिसे कमजोर एआई के रूप में भी जाना जाता है, विशिष्ट कार्यों को करने के लिए डिजाइन किया गया है और उन क्षेत्रों में अत्यधिक कुशल है। उदाहरणः वाक् पहचान प्रणालियाँ वाक् से संबंधित केवल एक ही कार्य कर सकती हैं और छवि पहचान प्रणालियाँ केवल छवियों से संबंधित संकेत पर ही कार्य कर सकती हैं। मिडजर्नी आवाज पहचान के लिए एक इमेज जेनरेशन एआई और गूगल असिस्टेंट है। दूसरी ओर, जनरल एआई, जिसे स्ट्रॉन्ग एआई भी कहा जाता है, एआई का एक उन्नत रूप है जो मानव की तरह ही कार्यों और डोमेन की एक विस्तृत श्रृंखला में बुद्धिमत्ता को समझने, सीखने और लागू करने की क्षमता रखता है। उदाहरणः सोफिया एक सामाजिक ह्यूमनॉइड रोबोट । सोफिया का आर्किटेक्चर स्क्रिप्टिंग सॉफ्टवेयर, एक चॉट सिस्टम और ओपनकॉग से बना है, जो सामान्य सोच के लिए विकसित एआई सिस्टम का एक उदाहरण है और जिसे आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस (एजीआई) कहा जाता है।

12वीं के बाद एआई इंजीनियर कैसे बनें?

इकोनॉमिक फोरम के मुताबिक, 12वीं के बाद एआई सबसे ट्रेंडिंग करियर विकल्पों में से एक बन गया है क्योंकि एआई और ऑटोमेशन के कारण 2025 तक 97 मिलियन नई भूमिकाएं बनने की उम्मीद है। गणित, भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान में मुख्य कमान गणित, भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपनी उच्च शिक्षा पूरी करने से शुरुआत करें। ये विषय एआई इंजीनियरिंग में आपके भविष्य के अध्ययन के लिए एक ठोस आधार प्रदान करते हैं। स्नातक की डिग्री हासिल करें। आप कंप्यूटर विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, या डेटा विज्ञान जैसे प्रासंगिक क्षेत्रों के साथ एआई में बी.टेक, या बीएससी एआई जैसे स्नातक डिग्री कार्यक्रम में नामांकन कर सकते हैं। यह आपको प्रोग्रामिंग, एल्गोरिदम, डेटा संरचनाओं और अन्य आवश्यक अवधारणाओं का गहन ज्ञान प्रदान करेगा। भारत के शीर्ष आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कॉलेजों में प्रवेश पाने के इच्छुक छात्र प्रसिद्ध परीक्षा आयोजित करनेवाले अधिकारियों और विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न एआई इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा दे सकते हैं।

प्रोग्रामिंग और डेटा कौशल हासिल करें– पायथन, आर, जावा, या सी जैसी प्रोग्रामिंग भाषाओं में दक्षता विकसित करें। इसके अतिरिक्त, डेटा हेरफेर और विश्लेषण तकनीक सीखें, क्योंकि बड़े डेटासेट के साथ काम करना एआई इंजीनियरिंग का एक मूलभूत पहलू है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में विशेषज्ञता अपने स्नातक कार्यक्रम के दौरान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और डेटा विज्ञान में गहराई से जाने वाले पाठ्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करें। यह विशेषज्ञता आपको एआई इंजीनियर के रूप में काम करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करेगी। उम्मीदवार अपनी पूर्णकालिक डिग्री हासिल करने के दौरान एआई और मशीन लर्निंग में अल्पकालिक प्रमाणन कार्यक्रमों में जा सकते हैं, कुछ लोकप्रिय अल्पकालिक प्रमाणन पाठ्यक्रम नीचे दिए गए हैंः एंड्रयू एनजी द्वारा एआई फॉर एवरीवन आईबीएम द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का परिचय यूसी सैन डिएगो द्वारा मशीन लर्निंग फंडामेंटल पायथन के साथ मशीन लर्निंग का परिचय कोलंबिया विश्वविद्यालय द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस माइक्रोमास्टर्स एआई उत्पाद प्रबंधक नैनोडिग्री उन्नत एआईः मशीन लर्निंग और न्यूरल नेटवर्क व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करें जबकि सैद्धांतिक ज्ञान महत्वपूर्ण है, व्यावहारिक अनुभव भी उतना ही महत्वपूर्ण है। परियोजनाओं, इंटर्नशिप, या अंशकालिक नौकरियों में संलग्न रहें जो आपको एआई अवधारणाओं को लागू करने और वास्तविक दुनिया के डेटासेट के साथ काम करने की अनुमति देते हैं। यह अनुभव आपकी समस्या–समाधान क्षमताओं को बढ़ाएगा और आपको उद्योग में मूल्यवान अंतरदृष्टि प्रदान करेगा।

उन्नत अध्ययन करें– कृत्रिम

बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग या संबंधित क्षेत्र में मास्टर डिग्री हासिल करने पर विचार करें। यह उन्नत डिग्री एआई अवधारणाओं के बारे में आपकी समझ को गहरा करेगी, आपको अनुसंधान के विशाल क्षेत्र से परिचित कराएगी और उच्च–स्तरीय नौकरी के अवसर खोलेगी।

उभरती प्रौद्योगिकियों से अपडेट रहें– एआई एक तेजी से विकसित होने वाला क्षेत्र है, इसलिए नवीनतम प्रगति से अवगत रहना आवश्यक है। उद्योग प्रकाशनों का अनुसरण करें, सम्मेलनों में भाग लें, एआई समुदायों में शामिल हों और उभरती प्रौद्योगिकियों, उपकरणों और सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ अपडेट रहने के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में शामिल हों।

पोर्टफोलियो बनाएं– एक पोर्टफोलियो बनाएं जो आपके एआई प्रोजेक्ट, शोध कार्य और व्यावहारिक अनुप्रयोगों को प्रदर्शित करे। यह संभावित नियोक्ताओं के सामने आपके कौशल और क्षमताओं को प्रदर्शित करेगा और एआई इंजीनियर के रूप में नौकरी पाने की आपकी संभावनाओं को बढ़ाएगा। उदाहरणरू आप फ्रीमियम मॉडल में Wix.com, Canva.com, Google Blogger, Adobe.com, Reddit और Word Press पर एक पोर्टफोलियो बना सकते हैं।

नेटवर्क और सहयोग करें– ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, मीटअप या सम्मेलनों के माध्यम से एआई उद्योग में पेशेवरों के साथ नेटवर्क बनाएं। अपने पेशेवर नेटवर्क का विस्तार करने और विभिन्न एआई अनुप्रयोगों के संपर्क में आने के लिए परियोजनाओं पर सहयोग करें और हैकथॉन या प्रतियोगिताओं में भाग लें। उदाहरणः आप इन वेबसाइटों GitHub, LinkedIn, Kaggle, Keystone, Devpost, और AI Stack Exchange पर अपनी परियोजनाओं को प्रकाशित और सहयोग कर सकते हैं।

नौकरी के अवसर तलाशें– एक बार जब आप अपने कौशल और ज्ञान में आश्वस्त महसूस करते हैं, तो कंपनियों या अनुसंधान संस्थानों में एआई इंजीनियर पदों के लिए आवेदन करना शुरू करें। हमेशा याद रखें कि सीखना एक आजीवन प्रक्रिया है, इसलिए अपने कौशल को उन्नत करना जारी रखें, नई एआई तकनीकों का पता लगाएं और क्षेत्र में नवीनतम विकास के बारे में उत्सुक रहें।

एक एआई इंजीनियर क्या करता है?– एआई इंजीनियर क्या करते हैं? एआई इंजीनियर बुद्धिमान सिस्टम को डिजाइन और विकसित करने के लिए काम करते हैं जो सीख सकते हैं और निर्णय ले सकते हैं। वे एआई मॉडल और एल्गोरिदम बनाने के लिए प्रोग्रामिंग, डेटा साइंस और मशीन लर्निंग में अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करते हैं। एक एआई इंजीनियर के रूप में, आपके काम में डेटा एकत्र करना और प्रीप्रोसेसिंग करना, उपयुक्त मॉडल का चयन करना, बड़े डेटासेट का उपयोग करके उन्हें प्रशिक्षित करना और उनके प्रदर्शन को अनुकूलित करना शामिल है। एआई इंजीनियर मॉडल की सटीकता का भी मूल्यांकन करते हैं। वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने में उनकी प्रभावशीलता को प्रमाणित करना। वे फीडबैक और नए डेटा के आधार पर मॉडलों को लगातार परिष्कृत और बेहतर बनाते हैं। एआई इंजीनियर निम्नलिखित क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। एआई इंजीनियर ऐसे चौटबॉट का आविष्कार कर रहे हैं जो ग्राहकों के सवालों का जवाब दे सकते हैं और मानवीय भागीदारी की आवश्यकता के बिना मुद्दों को हल कर सकते हैं। ये चौटबॉट ग्राहक इंटरैक्शन के डेटासेट में कुशल हैं, और वे मानव भाषा की विविधता को समझना भी सीख सकते हैं। वे डॉक्टरों को बीमारियों की अधिक सटीक पहचान करने में मदद करने के लिए एल्गोरिदम विकसित कर रहे हैं। ये एल्गोरिदम एक्स–रे और रोगी रिकॉर्ड के बड़े डेटासेट पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, और वे उन पैटर्न की पहचान करना सीख सकते हैं जिन्हें मनुष्यों के लिए देखना मुश्किल होगा। एआई इंजीनियर वित्तीय सेवाओं में गलत लेनदेन का पता लगाने के लिए मशीन लर्निंग का उपयोग कर रहे हैं। उन्हें धोखाधड़ी और कानूनी लेनदेन के डेटासेट पर प्रशिक्षित किया जाता है ताकि वे धोखाधड़ी से जुड़े पैटर्न की पहचान करना सीख सकें।

एआई इंजीनियरिंग के लिए योग्यताएँ– 12वीं के बाद एआई इंजीनियरिंग में करियर बनाने के लिए आम तौर पर कुछ योग्यताओं और कौशल की आवश्यकता होती है। यहाँ प्रमुख विचार हैंः शैक्षिक पृष्ठभूमि एक

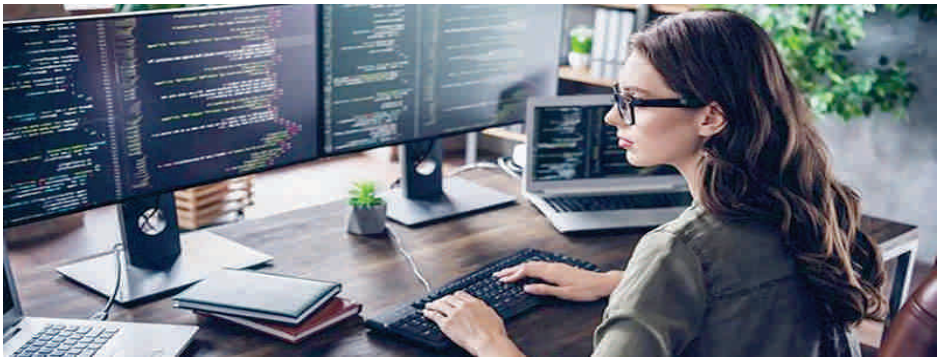

मजबूत शैक्षिक नींव आवश्यक है। अधिकांश एआई इंजीनियरिंग भूमिकाओं के लिए कंप्यूटर विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, गणित या इंजीनियरिंग जैसे प्रासंगिक क्षेत्र में कम से कम स्नातक की डिग्री की आवश्यकता होती है। कुछ नियोक्ता मास्टर या पीएचडी जैसी उन्नत डिग्री वाले उम्मीदवारों को प्राथमिकता दे सकते हैं। एआई, मशीन लर्निंग या संबंधित अनुशासन में। गणित और सांख्यिकी एआई इंजीनियरिंग में जटिल एल्गोरिदम और मॉडल के साथ काम करना शामिल है, जिसके लिए गणित और सांख्यिकी की ठोस समझ की आवश्यकता होती है। प्रमुख गणितीय अवधारणाओं में रैखिक बीजगणित, कैलकुलस, संभाव्यता सिद्धांत और अनुकूलन तकनीक शामिल हैं। इन क्षेत्रों में दक्षता आपको एआई मॉडल को प्रभावी ढंग से विकसित और विश्लेषण करने में सक्षम बनाती है।

डेटा साइंस और मशीन लर्निंग– एआई इंजीनियरिंग के लिए डेटा विज्ञान सिद्धांतों और मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का ज्ञान मौलिक है। पर्यवेक्षित और अनुपयोगी शिक्षण, प्रतिगमन, वर्गीकरण, क्लस्टरिंग और फीचर इंजीनियरिंग जैसी अवधारणाओं से परिचित होना आवश्यक है। वास्तविक दुनिया की समस्याओं के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम को लागू करने में व्यावहारिक अनुभव को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

एआई इंजीनियरिंग के लिए कौशल प्रोग्रामिंग कौशल एआई इंजीनियरों के लिए प्रोग्रामिंग में दक्षता महत्वपूर्ण है। आपके पास आमतौर पर एआई में उपयोग की जाने वाली प्रोग्रामिंग भाषाओं, जैसे Python, R, Java, या C++ पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए। TensorFlow, PyTorch, Sci-kit-learn, या Keras जैसे फ्रेमवर्क और लाइब्रेरी से परिचित होना भी फायदेमंद है।

समस्या– समाधान और विश्लेषणात्मक कौशल– एआई इंजीनियरों को मजबूत समस्या–समाधान और विश्लेषणात्मक क्षमताओं की आवश्यकता है। उन्हें पैटर्न की पहचान करनी चाहिए, कुशल एल्गोरिदम तैयार करना चाहिए और एआई मॉडल विकास और तैनाती के दौरान उत्पन्न होने वाली समस्याओं का निवारण करना चाहिए। नवीन समाधानों को डिजाइन करने के लिए आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता महत्वपूर्ण हैं।

डोमेन की जानकारी– आप जिस उद्योग या एप्लिकेशन डोमेन में काम करते हैं, उसके आधार पर डोमेन–विशिष्ट ज्ञान होना फायदेमंद हो सकता है। स्वास्थ्य सेवा, वित्त, ई–कॉमर्स, या स्वायत्त प्रणाली जैसे डोमेन की चुनौतियों और विशिष्ट आवश्यकताओं को समझने से अनुरूप एआई समाधान विकसित करने की आपकी क्षमता बढ़ सकती है। भारत में शीर्ष एआई कॉलेज भारत में, कई सरकारी और निजी इंजीनियरिंग कॉलेज एआई में यूजी और पीजी पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पाठ्यक्रम प्रदान करने वाले भारत के शीर्ष कॉलेजों की सूची नीचे दी गई है: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), रूड़की आईआईटी बनारस हिंदूविश्वविद्यालय (बीएचयू) आईआईटी गुवाहाटी–भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), गुवाहाटी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), हैदराबाद बिट्स, पिलानी राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), कर्नाटक एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, चेन्नई पेट्रोलियम एवं ऊर्जा अध्ययन विश्वविद्यालय (यूपीईएस), देहरादून।

एआई इंजीनियर का वेतन क्या है? एआई इंजीनियर का वेतन व्यक्ति के कौशल और कार्य अनुभव पर निर्भर करता है। भारत में एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इंजीनियर का औसत वेतन 1,500,000 रुपये प्रति वर्ष है। ❐

बिहार की राजनीति में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बेटे निशांत कुमार शामिल होंगे ?

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में कई नेताओं के पुत्र चुनाव मैदान में उतरने की तैयारी में हैं, जिनमें जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बेटे निशांत कुमार एवं वरिष्ठ नेता वशिष्ठ नारायण सिंह के पुत्र सोनू सिंह, भारतीय जनता पार्टी के कुम्हरार के विधायक अरुण कुमार सिन्हा के बेटे आशीष सिन्हा, राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह के पुत्र अजीत सिंह, कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मदन मोहन झा के पुत्र माधव झा, पूर्व सांसद और पूर्व केन्द्रीय मंत्री रामकृपाल यादव के पुत्र अभिमन्यु यादव शामिल हैं और सुर्खियों में हैं।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपने पुत्र निशांत कुमार को अपनी राजनीति की अंतिम पारी में लाना चाह रहे हैं। इसकी चर्चा राजनीति गलियारों में खूब हो रही है। जनता दल यूनाइटेड (जदयू) और एनडीए में निशांत कुमार की राजनीति में इंट्री पर चुप्पी बनी हुई है। इससे लगता है कि इस इंट्री को मूक समर्थन है।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार विधानसभा चुनाव 2025 की तैयारी में लगे हुए हैं। उन्होंने "प्रगति यात्रा" पूरी कर ली है। अब एनडीए पूरी तौर पर 2025 में भी जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के नीतीश कुमार को ही मुख्यमंत्री के रूप में देखना चाहती है। केन्द्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पुत्र निशांत कुमार की राजनीतिक इंट्री का स्वागत किया है।

ऐसे देखा जाए तो निशांत कुमार में वह सभी गुण हैं जो एक युवा राजनीतिज्ञ में होना चाहिए। यदि ऐसे लोग राजनीति में आते हैं तो, बिहार और देश, तरक्की की राह पर जा सकेगा। निशांत कुमार के लिए राजनीति में आने का यह बिल्कुल उपयुक्त समय है।

यदि राजनीतिक विश्लेषक की माने तो उनका कहना है कि निशांत कुमार को बिल्कुल राजनीति में आना चाहिए, क्योंकि निशांत एक युवा हैं और उन्होंने इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ उनके निवास में रहकर और पिता के सानिध्य में उन्होंने राजनीति के गुर सीखे हैं। वह राजनीति में आते हैं तो यह बिहार की राजनीति के लिए शुभ संकेत होगा।

आज की राजनीति में बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है। युवाओं को यह लगता है कि युवा ही बेरोजगारी की समस्या का समाधान कर सकता है। ऐसे में निशांत कुमार युवा हैं और एक युवा यह बेहतर समझता है कि युवाओं के लिए क्या कुछ करना चाहिए। निशांत कुमार राजनीतिक परिवार से आते हैं, उनके दादा स्वतंत्रता सेनानी थे और पिता लंबे समय से राजनीतिक जीवन में हैं। इन लोगों से उन्होंने बहुत कुछ सीखा होगा, इसका लाभ वह बिहार को दे सकते हैं। निशांत कुमार जैसे युवा अगर बिहार की राजनीति में आते हैं तो यह एक अच्छा संकेत होगा।

जबकि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार परिवारवाद के खिलाफ रहे हैं। उनके परिवार से अब तक कोई भी संसदीय राजनीति में नहीं है। अब जबकि नीतीश कुमार राजनीति के ढलान पर हैं तो वैसी स्थिति में सवाल यह उठा रहा है कि जनता दल यूनाइटेड (जदयू) की कमान कौन संभालेगा ? मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पुत्र निशांत की ओर लोग आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं। जनता दल यूनाइटेड (जदयू) नेता निशांत कुमार को लेकर आशान्वित हैं। जबकि निशांत कुमार राजनीति में अभी दक्ष नहीं हैं, फिर भी निशांत कुमार एक विकल्प के रूप में दिख रहे हैं। पार्टी के वरिष्ठ नेता विजय चौधरी ने कहा है कि इस पर अंतिम फैसला नीतीश कुमार को लेना है।

अगर गौर से देखा जाए तो निशांत कुमार की राजनीतिक इंट्री को लेकर पूरी तरह से काम चल रहा है। जदयू कार्यालय के बाहर निशांत कुमार का पोस्टर लग गया है। तेजस्वी यादव, उपेन्द्र कुशवाहा जैसे नेता उनका राजनीति में स्वागत कर रहे हैं।

राजनीतिक विशेषज्ञ का मानना है कि परिवारवाद को लेकर राष्ट्रीय जनता दल के मुखिया पर विरोधी दल हमेशा राजनीतिक हमला करते रहते हैं। लेकिन आज, कोई भी दल ऐसा नहीं लगता, जो परिवारवाद से दूर है। देखा जाए तो, नेता पुत्र को ज्यादातर सफलता नेता पिता के छत्र छाया में ही मिलती है।

उदाहरण के रूप में देखा जाए तो बिहार की राजनीति में सक्रिय हैं, लालू प्रसाद के पुत्र तेजस्वी, तेज प्रताप और पुत्री मीसा भारती, स्व. रामविलास पासवान के पुत्र चिराग पासवान, जीतन राम मांझी के पुत्र संतोष मांझी, स्व. जगन्नाथ मिश्रा के पुत्र नीतीश मिश्रा, जगदानंद सिंह के पुत्र सुधाकर सिंह, शिवानन्द तिवारी के पुत्र राहुल।

अब देखा जाए तो राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के वरिष्ठ नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी के पुत्र, जगदानंद सिंह के छोटे बेटे, बाहुबली शहाबुद्दीन के बेटे ओसामा, बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव के बेटे नितिन, भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के वरिष्ठ नेता अश्विनी चौबे के पुत्र अर्जित शाश्वत, भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल के पुत्र, बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह के बेटे आनंद रमन, जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) के वरिष्ठ नेता हरि नारायण सिंह के पुत्र चुनाव लड़ने को तैयार दिख रहे हैं। ❐

सगाई में बड़ा ट्विस्ट-रोका या धोखा! फिनाले ड्रामा में माता-पिता की एंट्री!

मुंबई ब्यूरो, जियो हॉटस्टार पर सगाई–रोका या धोखा ने दर्शकों को अपनी सीटों से बांधे रखा है, और जब प्रतियोगियों को लगा कि उन्होंने सब कुछ समझ लिया है, तो मेजबान ऊर्फी जावेद और हर्ष गुजराल ने आखिरी धमाका कर दिया! एक नाटकीय मोड़ में, अंतिम जोड़े – करण–सिफत, वैभव–आयशा और पृथ्वीर–आजमा को न केवल एक–दूसरे के प्रति अपने प्यार को साबित करना होगा, बल्कि अब तक की सबसे बड़ी परीक्षा का सामना करना होगा, अपने माता–पिता को मनाना!

महज 10 दिनों के तूफानी रोमांस के बाद, रोका का सफर अपने सबसे गहन चरण में पहुँच रहा है। भावनाओं के चरम पर होने के साथ, माता–पिता का आगमन खेल को पूरी तरह से बदल देगा। क्या वे अपने बच्चों की पसंद को स्वीकार करेंगे, या वे इन उभरते रिश्तों को कुचल देंगे? दबाव अपने चरम पर है क्योंकि परिवार इन जोड़ों के भाग्य का फैसला करने के लिए आगे आते हैं। अंतिम फैसले के आने पर तीखी नोकझोंक, अप्रत्याशित दिल टूटने और चौंकाने वाले खुलासे की उम्मीद करें।

एंगेज्ड – रोका या धोखा केवल एक और डेटिंग शो नहीं है – यह प्यार, प्रतिबद्धता और नियति की परीक्षा है। प्रतियोगियों को चौंकाने वाले एलिमिनेशन, सरप्राइज वाइल्डकार्ड और अब, माता–पिता की भागीदारी से निपटना होगा, जो इसे अब तक का सबसे अप्रत्याशित रियलिटी डेटिंग शो बनाता है!

जियो हॉटस्टार पर लाइव स्ट्रीमिंग, एंगेज्ड – रोका या धोखा अपने बोल्ड फॉर्मेट और अप्रत्याशित ट्विस्ट के साथ रियलिटी डेटिंग को फिर से परिभाषित कर रहा है। ऊर्फी जावेद अपनी अनफिल्टर्ड एनर्जी और हर्ष गुजराल के साथ हास्य की सही खुराक के साथ, यह फिनाले भावनाओं का रोलरकोस्टर होने वाला है।

किसको अपने माता–पिता का आशीर्वाद मिलेगा? कौन अंतिम रोका तक पहुँचेगा? और कौन अंतिम धोखा का सामना करेगा? सबसे नाटकीय फिनाले यहाँ है – और फिर कभी कुछ भी वैसा नहीं होगा! जियो हॉटस्टार पर एंगेज्ड – रोका या धोखा के रोजाना नए एपिसोड देखें। ❐

होली में बनाएं संतरे के स्वाद-युक्त मालपुए

✍किरण उपाध्याय
रेसिपी एक्सपर्ट

इस होली में बनाएं संतरे के स्वादयुक्त मालपुआ, जो बहुत ही स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक होते हैं।

सामग्रियांः–

एक कटोरी मैदा, आधा कटोरी सूजी, दो पके हुए केले, एक कटोरी दूध या आवश्यकता अनुसार, ड्राई फ्रूट्स आवश्यकता अनुसार, छोटी इलायची चार, दो संतरे का रस, चीनी आधा कटोरी या स्वाद अनुसार, घी या रिफाइंड तलने के लिए।

मालपुआ बनाने की विधिः–

एक बड़े बर्तन में हम मैदा, सूजी, चीनी स्वाद अनुसार, ड्राई फ्रूट्स आवश्यकता अनुसार, दूध डालकर एक गाढ़ा घोल तैयार कर लेंगे। इसे थोड़ी देर करीब 1 घंटा फुलने के लिए छोड़ देंगे।

चाशनी बनाने की विधिः–

एक बर्तन में हम एक कटोरी चीनी और आधा कटोरी पानी डालकर मध्यम आंच पर उबालकर चाशनी बना लेंगे। जब हमारी चाशनी बन जाएगी तब उसमें हम करीब आधा संतरे का रस मिला लेंगे।

करीब 1 घंटे बाद हमारा घोल अच्छी तरह से फुल गया है, अब हम इसमें पके हुए केले को अच्छी तरह से मैश कर लेंगे और घोल में मिला लेंगे, हम छोटी इलायची का पाउडर और बचे हुए संतरे का रस भी घोल में मिला लेंगे। अब हम कढ़ाई में घी या रिफाइंड डालकर मध्यम–धीमी आंच पर पुआ का घोल डालेंगे और सुनहरा होने तक तल लेंगे। पुआ तल लेने के बाद उसे हम चाशनी में डाल देंगे और फिर पांच मिनट तक चाशनी में डालने के बाद पुआ को बाहर निकाल लेंगे। हमारा स्वादिष्ट संतरे का स्वादयुक्त मालपुआ तैयार हो गया। ❐

अमेरिका के हिंदुओं ने 2025 में भी खूब हर्षोल्लास से महाशिवरात्रि का त्यौहार मिलजुलकर मनाया। टेक्सास राज्य के ह्यूस्टन शहर के प्राचीन हिंदू मंदिर ''हिन्दू वरशिप सोसायटी'' में महाशिवरात्रि की सुबह हिन्दू श्रद्धालुओं का जुटान हुआ। बड़ी संख्या में हिंदू परिवारों ने भगवान भोलेनाथ के शिवलिंग पर दुग्धाभिषेक किया।

होली के खूबसूरत रंगों की तरह,
आपको और आपके पूरे परिवार को,
हमारी तरफ से बहुत-बहुत रंगों
भरी उमंगो भरी शुभकामनाएं।

SHIVESH
Advocate
Patna High Court

बोलो जिंदगी

पत्रिका में विज्ञापन के लिए हमसे संपर्क करें।

Mob.: 7903935006 / 9122113522

E-mail : bolozindagi@gmail.com

बोलो जिंदगी

की तरफ से
समस्त पाठकों को
होली की
हार्दिक
शुभकामनाएँ